मुरैना की ऐतिहासिक विरासत

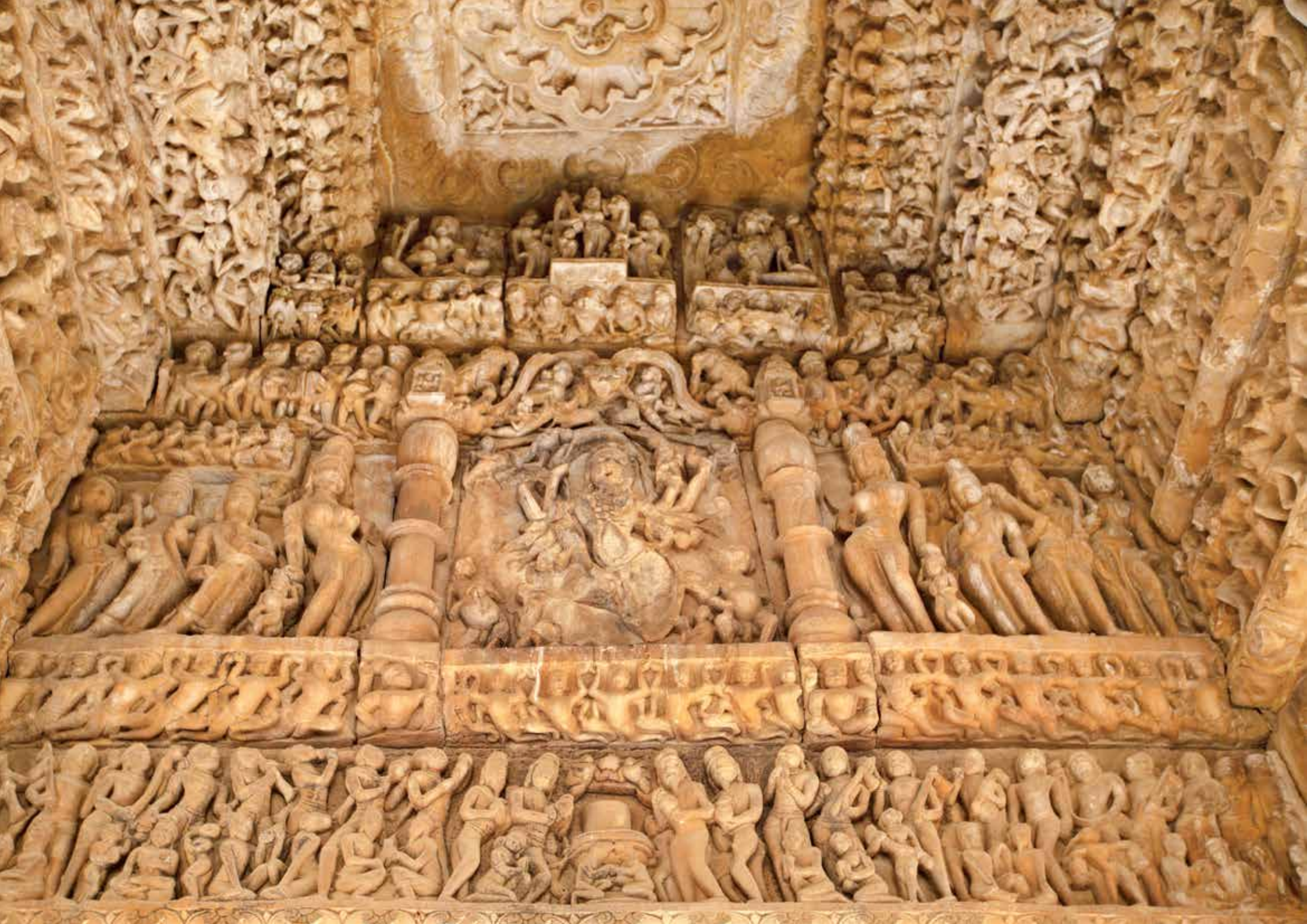

कॉफी टेबल बुक

इस पुस्तक के सर्वाधिकार प्रकाशक व लेखक के पास सुरक्षित हैं। प्रकाशक व लेखक की लिखित अनुमति के बिना इसके किसी भी अंश को फोटोकॉपी, रिकॉर्डिंग, इलेक्ट्रॉनिक अथवा मशीनी, किसी भी माध्यम से अथवा ज्ञान के संग्रहण एवं पुनर्प्रयोग की प्रणाली द्वारा, किसी भी रूप में, पुनरुत्पादित अथवा संचारित, प्रसारित नहीं किया जा सकता है।

ISBN	: 978-81-19206-32-2
कॉपीराइट	: लेखिका एवं प्रकाशक
प्रथम संस्करण	: 2023
लेखक एवं फोटोग्राफर	: डॉ. कायनात काजी
सम्पादन	: डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर
पृष्ठ सज्जा	: विनय काम्बोज
मुद्रण	: अद्विक पब्लिकेशन प्रा. लि.
प्रकाशक	: जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद, मुरैना, मध्यप्रदेश

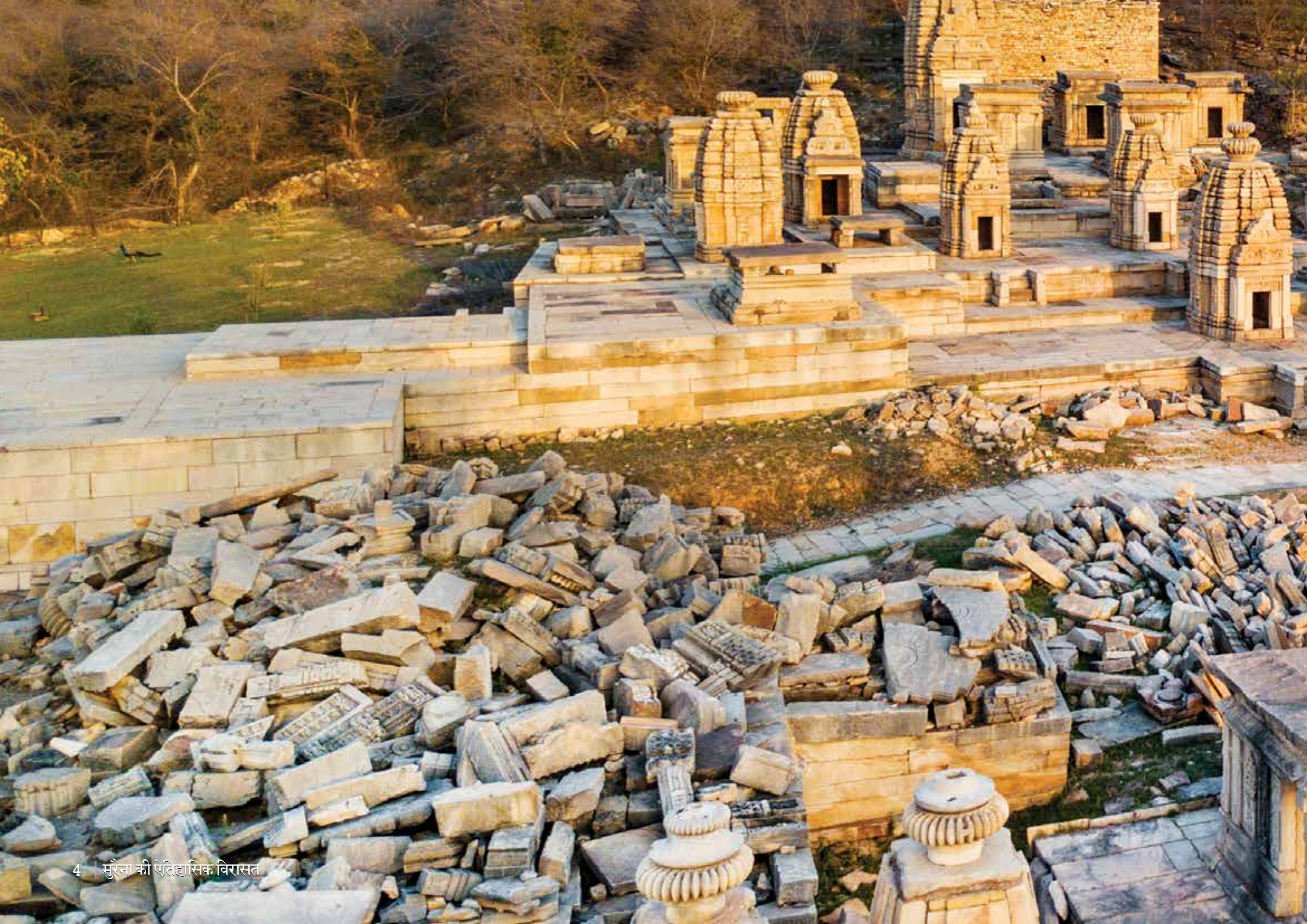

स्रोतः मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड

स्रोतः मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड

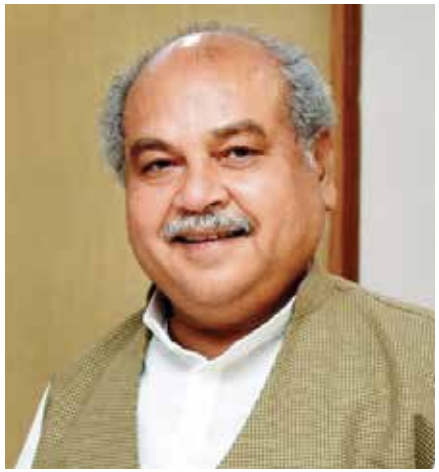

नरेन्द्र सिंह तोमर
NARENDRA SINGH TOMAR

कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री
भारत सरकार
कृषि भवन, नई दिल्ली
MINISTER OF AGRICULTURE & FARMERS WELFARE
GOVERNMENT OF INDIA
KRISHI BHAWAN, NEW DELHI

श्री नरेंद्र सिंह तोमर
केंद्रीय कृषि मंत्री, भारत सरकार

संदेश

मुझे यह जानकर बहुत प्रसन्नता हो रही है कि जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद द्वारा मुरैना की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहरों पर आधारित एक कॉफी टेबल बुक का प्रकाशन किया जा रहा है।

मुरैना की पावन धरती गवाह है बदलते हुए युगों की, इस धरती को सींचती है निर्मल नदी चम्बल। प्रागैतिहासिक काल से लेकर सतयुग और द्वापर युग के निशान मिलते हैं यहां के देवस्थलों में। यह धरती है शिव की। ये धरती है बेहरारे वाली माता, बसैया वाली माता जी की। यहां देखने को मिलते हैं अद्‌भुत अकल्पनीय चमत्कार। यहां के जंगल और घाटियां समेटे है दैवीय चमत्कार। यह भूमि है पटिया वाले बाबा की। यहां पधारे थे शनि भगवान। इस पावन धरती को सजाया-संवारा गुर्जर, प्रतिहार और सिकरवार राजवंशों ने।ये भूमि अपने में छुपाए हुए है असंख्यक मूल्यवान जैन मूर्तियां, जो लगातार निकलती रहती हैं मुरैना जिले के अलग-अलग क्षेत्र में।

यह मेरा सौभाग्य है कि मैंने इस पावन धरती में जन्म लिया और इसे फलते-फूलते देखा। मेरा सदा से प्रयास रहा है कि मुरैना केवल देश में ही नहीं, बल्कि विदेशों तक में अपनी विशेषताओं के लिए जाना जाए, जिसके लिए बहुतेरे प्रयास भी किए गए हैं और अनेकानेक सुविधाओं के साथ क्षेत्र का सतत विकास हो रहा है।

मुरैना की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक धरोहर को समेटे यह पुस्तक अपने आप में एक सराहनीय प्रयास है, मैं आशा करता हूं कि जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद मुरैना को पर्यटन मानचित्र पर एक विशिष्ट स्थान दिलवाने में कोई कोर-कसर बाकी नहीं रखेगा।

शुभकामनाओं सहित!

(नरेन्द्र सिंह तोमर)

WL-7/1
WL-7/3

संदेश

श्री अंकित अस्थाना
कलेक्टर एवम् ज़िला दंडाधिकारी, मुरैना

भारत सदियों से विश्व गुरु रहा है। आज भारत बड़ी तेज़ी से विश्व शक्ति के रूप में उभर रहा है। पूरा विश्व आज हमारी ओर उम्मीद से देख रहा है। हमारे देश की ताक़त हमारी संस्कृति है और इस संस्कृति की आत्मा वास करती है उन ऐतिहासिक धरोहरों में जिनका निर्माण सदियों पहले हुआ था।

विश्व मानचित्र पर अपनी विशिष्ट पहचान बनाए रखने के लिए ज़रूरी है कि हम अपने देश की इन अमूल्य धरोहरों का ना सिर्फ़ संरक्षण और संवर्धन करें अपितु इनकी गौरव गाथाओं को जन सामान्य तक पहुँचाएँ। मुरैना जिले में स्थित छठी शताब्दी से लेकर नौवीं शताब्दी के मध्य निर्मित इन महान संरचनों का दस्तावेज़ीकरण होना आवश्यक था। इससे निश्चित ही ज़िले में पर्यटन को भी बढ़ावा मिलेगा।

मैं आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से जिले के पर्यटन को एक नई पहचान और ऊर्जा मिलेगी।

श्री अंकित अस्थाना
कलेक्टर एवम् ज़िला दंडाधिकारी, मुरैना

संदेश

डॉ. इच्छित गढ़पाले
सीईओ जिला पंचायत, मुरैना

अपनी धरती और अपने लोगों के लिए जो बन पड़े वो करते जाना ये संस्कार मैंने अपने पिता से विरासत में पाए हैं। मुझे यह जागृति विरासत में मिली है। इसीलिए मुझे जिस क्षेत्र में भी सेवा करने का अवसर मिला मैंने पूरे मनोयोग से वहाँ के लोगों, पर्यावरण और संस्कृति के लिए काम किया। यह मेरा सौभाग्य है कि मुझे मुरैना की ओजस्वी धरती पर कार्य करने का अवसर मिला। यह धरती है शिव की। यह धरती है चौंसठ योगनियों की। यह धरती है शूरवीर गुर्जर-प्रतिहार राजाओं की।

मैं इस पुस्तक के माध्यम से उन सभी दिव्य शक्तियों को नमन करता हूँ और आशा करता हूँ कि इस पुस्तक के माध्यम से भारतीय पर्यटन मानचित्र पर मुरैना अपनी एक अलग पहचान बनाएगा।

डॉ. इच्छित गढ़पाले
सीईओ जिला पंचायत,
मुरैना

प्राक्कथन

इस कॉफी टेबल बुक के माध्यम से डॉ. कायनात क़ाज़ी ने बटेश्वर, पढ़ावली, मितावली और शनिचरा की पावन भूमि को शब्दबद्ध किया है और पुस्तक में संकलित शानदार तस्वीरें गुज़रे वक़्त और धुंधलाते अतीत के गलियारों में ले जाती हैं। डॉ क़ाज़ी पूरे आत्मविश्वास के साथ आपकी उंगली पकड़कर इस सफ़र पर ले चल रही हैं, और वो भी कुछ इस अंदाज़ के साथ जैसे वह इस भूमि के चप्पे-चप्पे को ख़ूब पहचानती हैं। सच यह है कि वह उत्कृष्ट लेखिका होने के साथ-साथ कुशल फोटोग्राफर भी हैं, और जब उनकी क़लम के साथ उनके कैमरे की कलाकारी सामने आती है तो इस पुस्तक की शुरुआत से लेकर अंतिम पृष्ठ तक पर फैली पूरी सामग्री बेहद मूल्यवान और संग्रहणीय बन जाती है।

मैंने 2004 की सर्दियों में पहली बार बटेश्वर की उस दुर्गम भूमि पर कदम रखे थे जहां पहुंचना बाहरी लोगों के लिए लगभग वर्जित था। लेकिन श्री विजय रमन, आईपीएस के हस्तक्षेप से मुझे बाग़ियों से घिरे बटेश्वर में 'प्रवेश' का अवसर मिला। श्री विजय रमन ही वह साहसी पुलिस अधिकारी थे जिन्होंने पानसिंह तोमर को मार गिराया था और बाद में संसद पर बम विस्फोट की साज़िश रचने वाले प्रमुख पाकिस्तानी आतंकी गाज़ी बाबा का भी ख़ात्मा किया था। जब मैं पहली बार बटेश्वर पहुंचा तो यह पावन भूमि बेहद उपेक्षित पड़ी दिखी। ऐसे लगता था मानो निराशा के गर्त ने उसे चारों ओर से घेर रखा हो। मुझे हर तरफ सैंकड़ों स्तंभ, भित्तिस्तंभ और लाखों पत्थर बिखरे हुए दिखायी दिए थे, जैसे किसी शक्तिशाली भूकंप ने मंदिरों से पटे पड़े इस शहर को झकझोर दिया हो और सभी पाषाण संरचनाएं धरती में हुए कंपन से नीचे आ गिरी हों। हमारे सामने इस क्षत-विक्षत हुई धरोहर को पुनः खड़ा करने की चुनौती थी। यही हमारी प्रेरणा भी बनी और हमने इंजीनियरिंग कौशल तथा बाग़ियों की मदद से देश की इस भूली-बिसरी विरासत को सहेजने का काम शुरू किया। समय की रेत पर फैले पत्थरों को जमा कर धीरे-धीरे हमने अस्सी से भी अधिक मंदिरों का पुनर्निर्माण किया। अभी भी लगभग एक सौ बीस मंदिर इस इलाक़े में यहां-वहां छितराए हैं और मिट्टी में दबे पड़े हैं, इसी इंतज़ार में कि एक दिन पुरातत्व विभाग का ध्यान फिर उनकी ओर जाएगा, फिर कोई आकर उन पर बिछी धूल-मिट्टी की परतों को रगड़कर एक बार फिर उनके पुराने गौरवशाली दिनों को लौटाएगा।

पढ़ावली के मंदिर तो अपनी त्रिआयामी और बारीक नक्क़ाशी के चलते कला-प्रेमियों के लिए ख़ुशियों का ख़ज़ाना हैं। पुराणों में दर्ज कितने ही क़िस्से-कहानियों में हुनर और कारीगरी के ज़िक्र हैं। ऐसा लगता है कि इन मंदिरों को गढ़ने वाले हाथों ने पुराणों में दर्ज उसी कारीगरी को साकार कर दिखाया है।

एक पहाड़ी पर अवस्थित मितावली का चौंसठ योगिनी मंदिर हमेशा से ही रहस्यमय और दूर से देखने पर बेहद धीर-गंभीर दिखायी देता है। इस गोलाकार मंदिर से मस्तिष्क में जैसे लहरें उत्पन्न होती हैं और इसे देखकर भारत की संसद तथा रोम के कोलोसियम की संरचनाओं का ख्याल सहज ही मन में उठता है। इस तांत्रिक मंदिर में देवी की प्रतिमा को पूजा जाता था और यह कई रहस्यमयी तांत्रिक क्रियाओं से भी जुड़ा रहा है। मैं जब 2004 में पहली बार इस तरफ आया था तो पढ़ावली और मितावली दोनों ही काफ़ी दयनीय

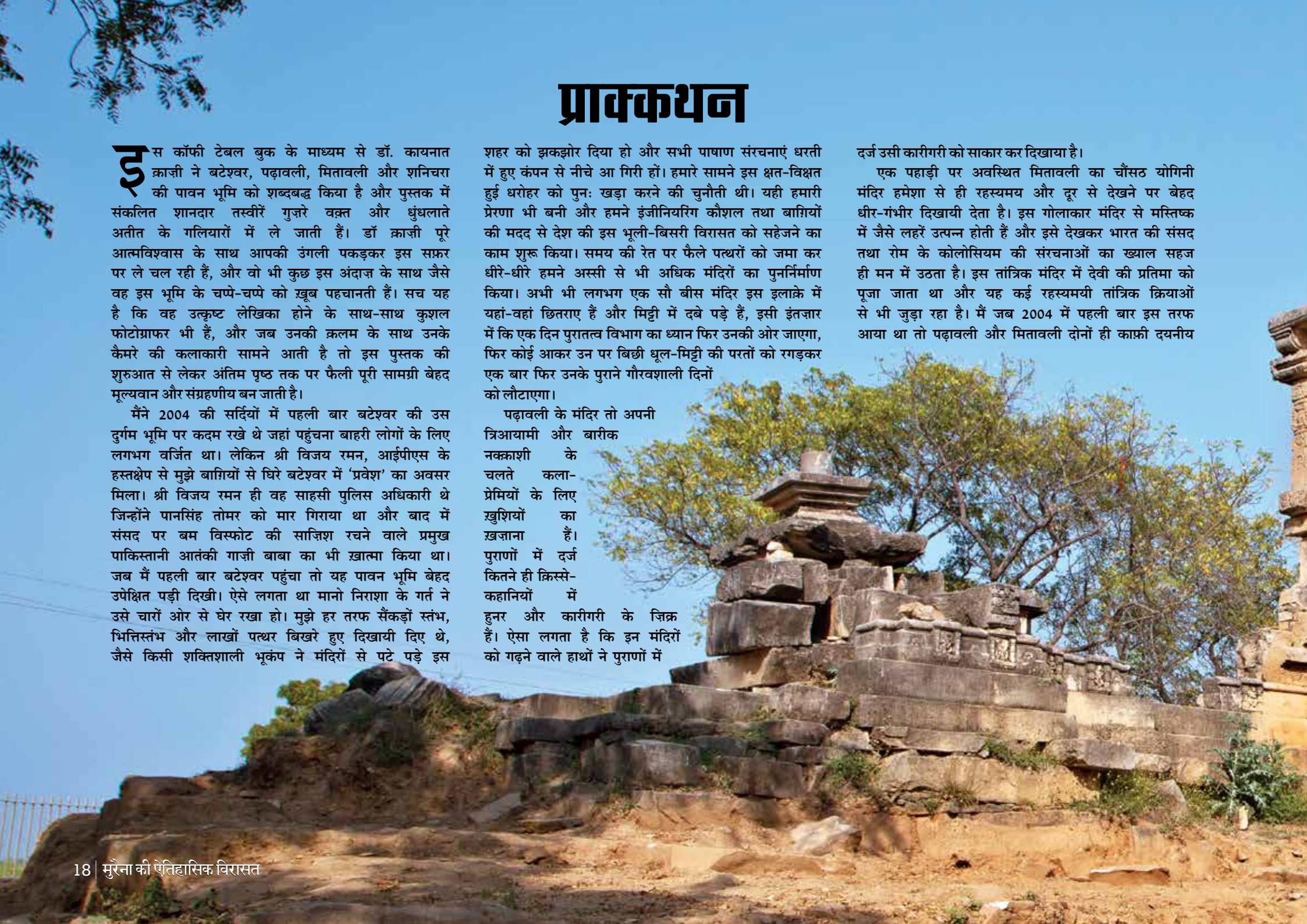

अवस्था में थे। इन मंदिरों की दीवारें खंडित पड़ी थीं और बीती कितनी ही सदियों की उपेक्षा ने इन्हें खंडहर बना डाला था। इनकी यह अवस्था देखकर ही हमें इनके संरक्षण और भावी पीढ़ियों के लिए इस धरोहर को समेटने-संभालने का विचार आया।

लेकिन एक बड़ी चुनौती डाकुओं के रूप में सामने थी। ये खंडहर बाग़ियों की लुका-छिपी के आंगन थे। मैं समझता हूं कि इंग्लैंड के रॉबिनहुड संग्रहालय की तर्ज़ पर यहां एक 'बाग़ी संग्रहालय' बनाया जाना तर्कसंगत होगा, जिसमें उन हथियारों और गोला-बारूदों को प्रदर्शित किया जा सकता है, जो यहां की जेलों और मालख़ानों में भरे पड़े हैं जिन्हें डाकुओं के साथ हुई मुठभेड़ों और उनके आत्मसमर्पण के बाद बरामद किया गया था। हालांकि इन बाग़ियों के ठौर-ठिकानों पर केंद्रित करीब तीस से अधिक फिल्में अब तक बनायी जा चुकी हैं, लेकिन यह इलाका पर्यटकों की नज़रों में अभी नहीं चढ़ा है। यह संग्रहालय इस कमी को दूर कर सकता है और विदेशी सैलानियों के अलावा उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश तथा राजस्थान के बाहर से आने वाले लोगों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन सकता है।

शनिचरा, बटेश्वर, पढ़ावली और मितवाली के पांच वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में कई छोटी-बड़ी पहाड़ियां, घाटियां और उतार-चढ़ाव हैं। इस क्षेत्र की जलवायु के अनुरूप फूलों के पेड़-पौधे रोपकर इस इलाके की लैंडस्केपिंग की जा सकती है। आसपास के ग्रामीणों की इस काम में मदद ली जा सकती है जिससे यह पावन भूमि फूलों की घाटी में बदली जा सकती है। सौंदर्यीकरण पर कुछ निवेश कर यहां प्राकृतिक रूप से हरियाली बढ़ाने का काम भी हो सकता है। लेकिन इसके लिए हमें न सिर्फ दृष्टि चाहिए, बल्कि संबंधित अधिकारियों और स्थानीय प्राधिकरणों के साथ तालमेल भी ज़रूरी है। मितावली की पहाड़ी से नीचे घाटी में देखने पर गेहूं के खेतों में हरा रंग और सरसों के खेतों का लुभावना पीला रंग सर्दियों के चार महीनों में चित्ताकर्षक बुनावट से मन मोह लेता है। मितावली की धरती गुलाबी आभा में लिपटे सूर्योदय और नयनाभिराम सूर्यास्त जैसे राज़ भी अपने सीने में ही छिपाए है, जिन्हें नए दौर के प्रकृति प्रेमियों के लिए सामने लाने की ज़रूरत है।

मध्य प्रदेश टूरिज्म डेवलपमेंट कार्पोरेशन ने इस इलाक़े में पर्यटन संभावनाओं को बख़ूबी समझा है और इसी को ध्यान में रखकर क्षेत्र के विकास की व्यापक योजनाएं भी तैयार की हैं। सड़कों को चौड़ी करने के अलावा यहां व्याख्या केंद्र (इंटरप्रेटेशन सेंटर्स) खोलने की योजना है, साथ ही, स्मारकों पर रोशनी का प्रबंध करने, पर्यटकों के लिए सुविधाएं जुटाने और होमस्टे योजना को साकार रूप देने की दिशा में भी प्रयास चल रहे हैं। जैसे ही इन सुविधाओं को यहां साकार रूप मिल जाएगा, यह पावन परिदृश्य सैलानियों के लिए चुंबकीय आकर्षण साबित होगा।

डॉ. कायनात क़ाज़ी द्वारा लिखी गई यह कॉफी टेबल बुक उन सभी पहलुओं और सूचनाओं को सामने लाती है जिन्हें किसी भी आम पाठक को जानना चाहिए। मैं इस प्राचीन धरोहर स्थल को लोकप्रिय बनाने की लेखिका की इस पहल के लिए उन्हें बधाई देता हूं।

पुरातत्ववेत्ता
के. के. मुहम्मद
पद्मश्री पुरस्कार विजेता एवं पूर्व क्षेत्रीय निदेशक,
भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण

भूमिका

यह बात है पिछले सितम्बर की। मध्य प्रदेश पर्यटन की ओर से न्यौता आया। प्रदेश में संस्कृति और सतत पर्यटन के प्रयासों को दिखाने का। मध्य प्रदेश मेरे प्रिय स्थानों में से एक है। वैसे ही जैसे बुद्ध के लिए उनकी प्रिय नगरी वैशाली। इसलिए इंकार का तो सवाल ही नहीं था। हमें क्या दिखाएंगे ? कहाँ-कहाँ लेकर जाएंगे कुछ पता नहीं था। बस भरोसा था कि जो भी दिखेगा वो अद्भुत होगा। इसका अच्छा शगुन हमें ग्वालियर पहुँचते ही मिल गया था। हमसे पहले हमारी अगुवाई करने देश के जाने माने पुरातत्वविद पद्मश्री के. के. मुहम्मद यानि कि करिंगमन्नू कुझियिल मुहम्मद जी मौजूद थे। मैंने दिल ही दिल में शशि शेखर जी की सराहना की। हमें बटेश्वर मंदिर समूह, चौंसठ योगिनी मंदिर, गढ़ी पढ़ावली दिखाने स्वयं वो व्यक्ति लेकर जा रहा है जिसने एक-एक पत्थरों को जोड़कर इन मंदिरों को दोबारा खड़ा किया है। जिनके बारे में हम ख़बरों में पढ़ा करते थे। आज वो सामने भी थे और मुख़ातिब भी। भारतीय मंदिरों की स्थापत्य कला में रूचि रखने वाले मुझ जैसे यायावर के लिए साक्षात नारायण के मिलने जैसा था। वो हमारा हाथ थामे एक-एक मूर्ति, पत्थरों से मिलवाते रहे और हम ज्ञान की उस बारिश में भीगते रहे। निहाल होते रहे।

मन में रह-रह कर यह ख़्याल आता कि जो घट रहा है। बीत रहा है। उसे रोक लूँ। थाम लूँ। हमेशा-हमेशा के लिए। पद्मश्री के. के. मुहम्मद ने अपने हाथों से इन बेजान पत्थरों को सहेजा था। मैं एक फ़ोटोग्राफ़र हूँ। मैं इन्हें अपने कैमरे में क़ैद करूँगी। यहाँ के एक-एक इंच का दस्तावेज़ीकरण करूँगी। इसी साध के साथ बटेश्वर से दिल्ली वापस आई थी। यह होगा कैसे इसका कोई मार्ग पता नहीं था। मैंने तो सिर्फ़ नीयत की थी। उसे पूरा करने वाला तो परम पिता परमेश्वर है। यह शिव की धरती है वही भेजेंगे किसी को।

और फिर एक दिन एक दूत ने ख़बर दी कि डॉ. इच्छित गढ़पाले जी ने मुरैना जिला पंचायत के सीईओ का पदभार संभाला है। मैंने बिना विलम्ब के उन्हें फोन लगाया और तेजस्वी अधिकारी ने मुझे मुरैना आने का न्यौता दिया। इस तरह मेरी भेंट जिला कलेक्टर श्री अंकित अस्थाना जी से हुई। उनसे मिलकर मन प्रसन्न हो गया। अपनी संस्कृति के संरक्षण के प्रति समर्पित अधिकारियों को देख हिम्मत मिलती है।

हमने दस्तावेज़ीकरण का काम शुरू किया। मेरे इस काम को सफल बनाने में अनेक लोगों ने सहयोग किया जिनमें सबसे पहले मैं आभार व्यक्त करती हूँ पद्मश्री के. के. मुहम्मद जी का, जिन्होंने मुझसे बटेश्वर मंदिर समूह की प्रामाणिक जानकारियाँ साझा कीं। मुझे बटेश्वर की राह दिखाने और सहयोग के लिए मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड के श्री शशि शेखर जी एवं मनोज कुमार सिंह जी का दिल से आभार।

उत्तर भारतीय गुर्जर प्रतिहार कालीन मंदिर स्थापत्य कला की बारीकियों से जुड़ी जानकारियाँ साझा करने के लिए भारतविद्याविद गुरुदेव श्रीकृष्ण 'जुगनू' जी एवं रोहित शर्मा जी की मैं सदैव ऋणी रहूंगी।

मैं आभारी हूँ मुरैना कलेक्ट्रेट के उन सभी कर्मचारियों की, जिन्होंने इस पुस्तक के बनने में सहयोग किया। यह पुस्तक ऐसे ही अनोखे लोगों के साझा प्रयास का नतीजा है।

अंत में मैं मेरे सहयोगी फ़ैज़ अहमद और सुधीर राणा का हृदय से आभार व्यक्त करती हूँ। इस पुस्तक को पारखी नज़र से संपादित करने के लिए मैं वीर बहादुर सिंह पूर्वांचल विश्वविद्यालय, जौनपुर के डॉ. दिग्विजय सिंह राठौर की आभारी हूँ।

मंगल मृदुल कामनाओं सहित
डॉ. कायनात क़ाज़ी

स्रोतः मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड

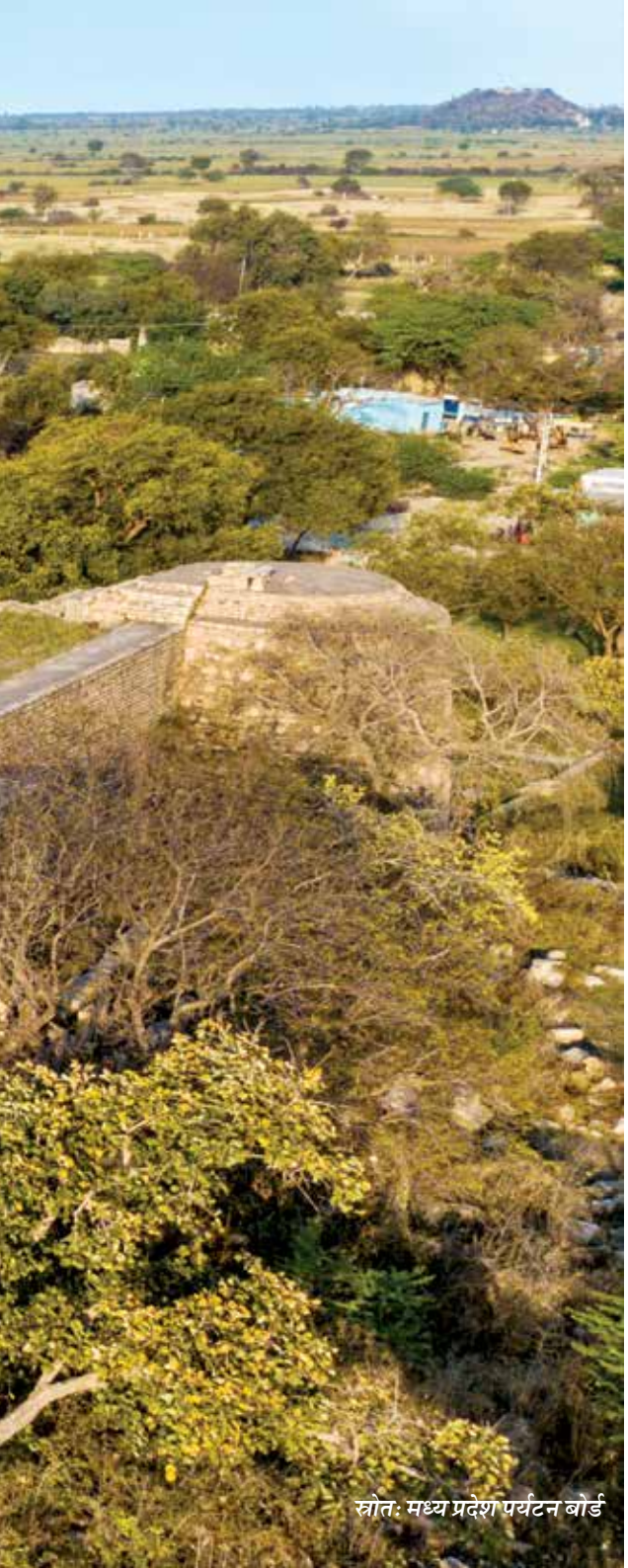

स्रोत: मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड

अनुक्रमणिका

1. बटेश्वर 24
2. बटेश्वर मंदिर समूह 26
3. मुरैना के संरक्षित स्मारकों का स्थापत्य 29
4. प्रवेश द्वार 37
5. तोरण 41
6. अलंकरण 43
7. जगती या अधिष्ठान 45
8. मूर्तिकला 46
9. कृष्ण बाल लीलाएं 57
10. मितावली 64
11. चौंसठ योगिनी मंदिर 66
12. चौंसठ योगिनियों के नाम 68
13. गढ़ी पढ़ावली 76
14. गुर्जर-प्रतिहार काल का स्थापत्य 79
15. देवालयों में दिव्य प्राणी 80
16. ककनमठ 106
17. शिव मंदिर 108
18. शिव ही आदि और शिव ही अंत है 124

शाश्वतं शिवम् अच्युतम्

बटेश्वर

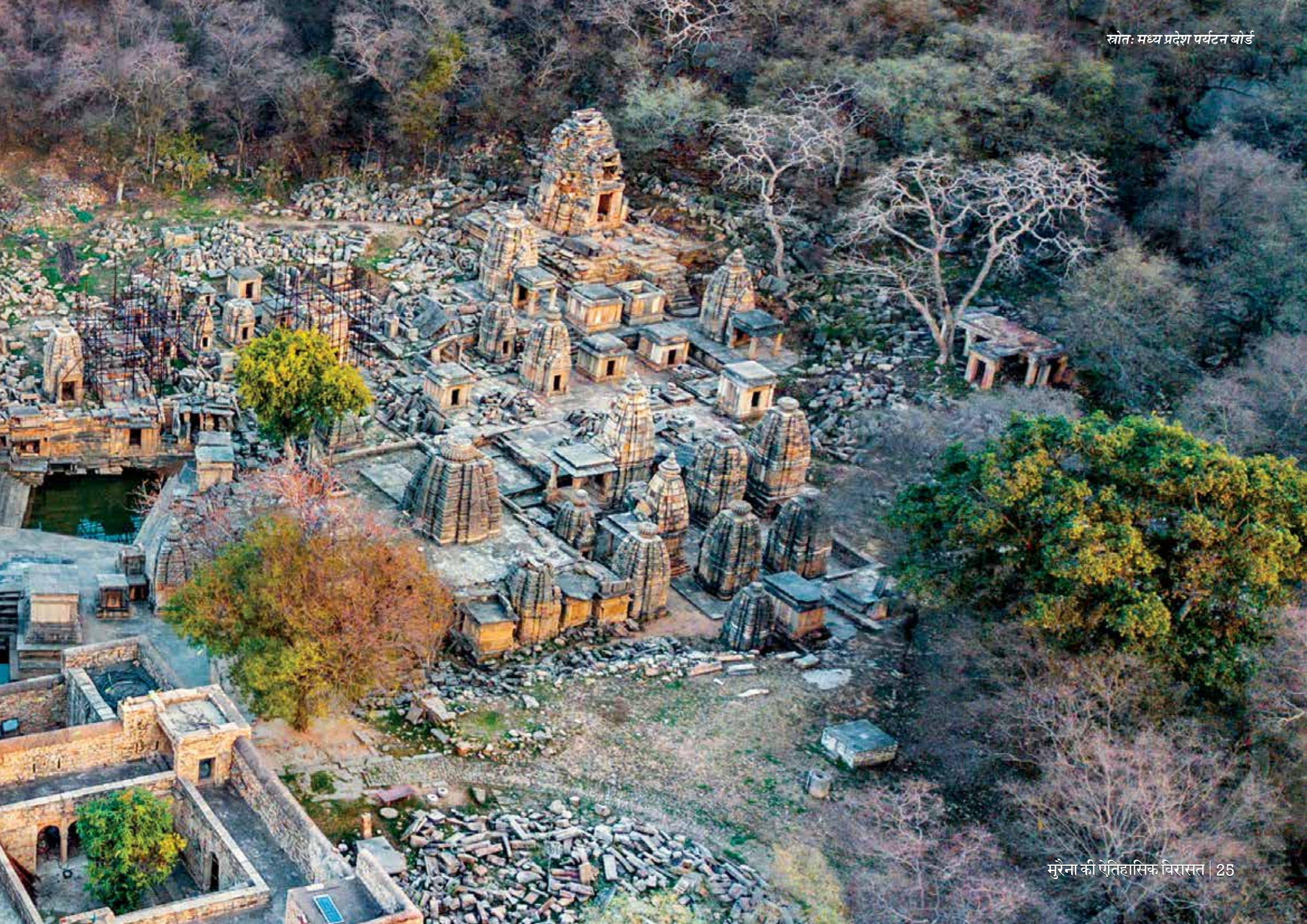

स्रोत: मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड

बटेश्वर मंदिर समूह

मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में पढ़ावली ग्राम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित बटेश्वर में मंदिरों के भग्नावशेष एक पहाड़ी की पश्चिमी तलहटी के एक विस्तृत भूभाग पर फैले हुए हैं। पाषाण निर्मित इन मंदिरों के अवशेषों में मुख्य रूप से द्वार, सोपानयुक्त तालाब, मंदिर स्थापत्य के भाग, हिन्दू देवी-देवताओं की प्रतिमाएं एवं स्तम्भों के अवशेष हैं, जिनको स्थापत्य कला की दृष्टि से परवर्ती गुप्तकाल से प्रतिहारकाल के मध्य रखा जा सकता है, जिसका समय काल छठवीं ई. से नौवीं ई. तक है ।

बटेश्वर में स्थित मंदिरों के यह अवशेष मंदिर कला के क्रमिक विकास की दृष्टि से महत्वपूर्ण हैं। प्राचीन मंदिरों में केवल एक गर्भगृह व छत सपाट हैं, जबकि कालान्तर में गर्भगृह के ऊपर एक शिखर का भी निर्माण होने लगा था। यहां स्थित भूतेश्वर महादेव मंदिर प्रतिहार कालीन मंदिर निर्माण कला के समस्त लक्षणों को प्रदर्शित करता है।

भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अथक प्रयासों से यहां हाल ही में कुछ मंदिरों का पुनर्निर्माण कर उन्हें वास्तविक स्वरूप प्रदान किया गया है।

मुरैना के संरक्षित स्मारकों का स्थापत्य

मध्य भारत में स्थित मंदिरों की स्थापत्य कला प्रमाण हैं गुप्तकालीन स्वर्णिम युग की। चौथी शताब्दी ईस्वी तक भारत में मंदिर इतने भव्य और अलंकारपूर्ण नहीं बनते थे। भारतीय उपमहाद्वीप में गुप्त काल में सबसे सुन्दर मंदिरों का निर्माण शुरू हुआ। इस युग की स्थापत्य कला ने नए आयामों को छुआ और इनमें नए तत्व समाहित हुए।

गुप्त साम्राज्य के बाद क्षेत्र में गुर्जर-प्रतिहार राजवंश का समय आया और तब यहां पर अनेक मंदिरों का निर्माण हुआ। गुर्जर-प्रतिहार राजवंश ने गुप्त काल की वास्तुकला को अपने मंदिरों की वास्तुकला की विशेषताओं में अंतर्निहित किया। उन्होंने विशाल मंदिरों, प्रासादों का निर्माण करवाना, उस समय ऐसी विशाल और अद् भुत संरचनाओं का निर्माण करवाना आपने राज्य की शक्ति के प्रदर्शन का अहिंसक माध्यम माना जाता था। यह राजवंश युद्ध क्षेत्र में दिखाए अपने शौर्य का उत्सव अद्भुत और विशालकाय मंदिर संरचनाओं का निर्माण करवा कर किया करते थे।

गुर्जर-प्रतिहार राजाओं द्वारा बनाए गए मंदिरों में और गुप्त काल के स्थापत्य कला में बहुत समानताएं देखने को मिलती हैं। दोनों स्थापत्य कलाओं की योजना के

सामान्य घटकों में गर्भगृह प्रकोष्ठ और मंडपम की समानता देखी जाती है। बाद के समय में इसमें विस्तार देते हुए मंडप के साथ बड़ा अहाता भी बनाया जाने लगा।

वैदिक धर्म के मानने वाले इन राजकुलों में मंदिर निर्माण का एक विशेष महत्त्व रहा है। उस समय मंदिर के ढांचे पर विशेष बल दिया जाता था। पुरातत्वविदों के अनुसार मंदिर के भागों को मानव शरीर के अंगों और उनकी उपयोगिता के अनुसार बाँट कर निर्माण किया जाता था। जिस प्रकार मानव शरीर कितना भी सुन्दर क्यों न हो लेकिन आत्मा के बिना निर्जीव है उसी प्रकार गर्भगृह में देवता की स्थापना के बिना मंदिर अपनी सम्पूर्णता को प्राप्त नहीं होता है।

उनका मानना था कि राजा तो केवल एक छोटे से राज्य का राजा है, लेकिन भगवान तो इस पूरी सृष्टि का पालनहार है। जिस प्रकार राजा के रहने के लिए बड़े और अलंकारपूर्ण महल बनवाए जाते हैं उसी प्रकार भगवान के रहने के लिए देवालय, शिवालय या देवायतन बनाए गए। इसी क्रम में जैसे राजा को हमेशा राजसी सम्मान दिया जाता है वैसे ही इस समस्त ब्रह्मांड के राजा को पूजा-अर्चना के साथ सम्मान दिया जाता है।

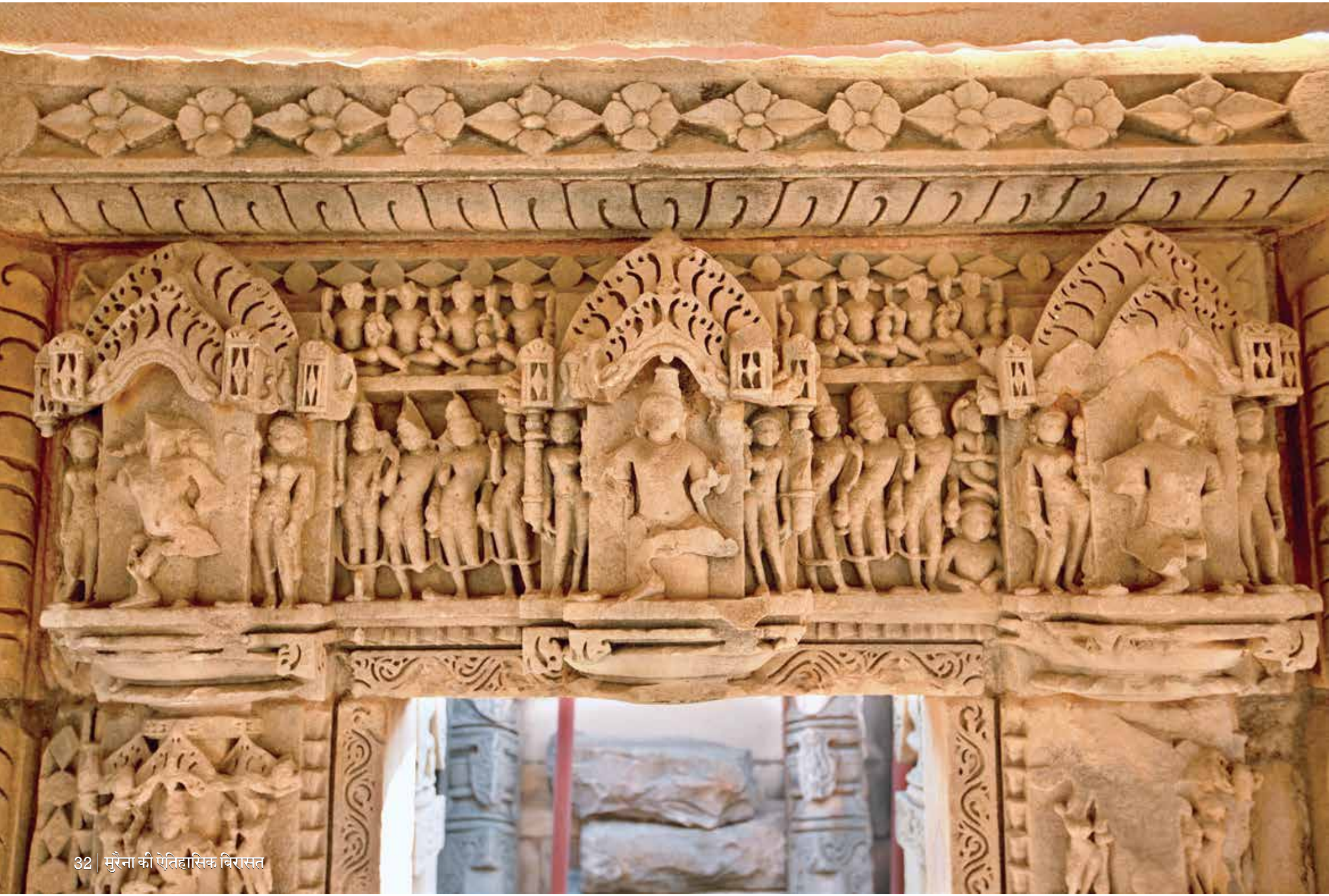

इन धार्मिक अनुष्ठानों को संपन्न करने हेतु मंडपम की आवश्यकता पड़ी। मंदिर की वास्तुकला में मंडपम ने मुख्य संरचना के साथ अपनी जगह बनाई।

राजप्रासाद में राज सिंघासन के ऊपर छतरी होती है उसी तरह मंदिर संरचना में शिखर जुड़ा। शिखर मंदिर की छत पर बनी एक ऐसी संरचना होती है जो अपनी ऊँचाई के क्रम में ऊपर की ओर क्रमशः पतली होती जाती है। उत्तर भारत के मंदिरों में ये बहुत ऊँचे नहीं होते जबकि दक्षिण भारत में शिखर बहुत ऊँचे होते हैं जिन्हें विमान भी कहा जाता है। मंदिर के गर्भगृह को मानव के गर्भगृह के अनुसार बनाया गया। यह मोटी दीवारों से बनी, छोटी और एक पतली संकरी गली से जुड़ी संरचना होती है। इस अँधेरे गर्भगृह में केवल देवता की मूर्ति ही एकमात्र ज्योतिपुंज होती है। इस संरचना की बाहरी दीवारें अलंकारपूर्ण मूर्तिकला से सजी होती हैं। यह सांसारिक जीवन का प्रतीक हैं। हम सांसारिक बातों को बाहर छोड़ कुछ सीढ़ियाँ ऊपर चढ़कर गर्भगृह की अँधेरी गली में प्रवेश करते हैं। इस गली को पार कर हम गर्भगृह में प्रवेश करते हैं, जहाँ हमें देव दर्शन होते हैं। यह स्थान एक ऊर्जा क्षेत्र होता है। अपने ईष्ट से सीधे संवाद स्थापित करने के लिए। यहाँ लगातार होने वाले मंत्रोच्चारण से सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण होता है। गर्भगृह की चारों दिशाओं में एक-एक द्वार होता है, जिसमें केवल पूरब दिशा का द्वार ही खुला होता है। आमतौर

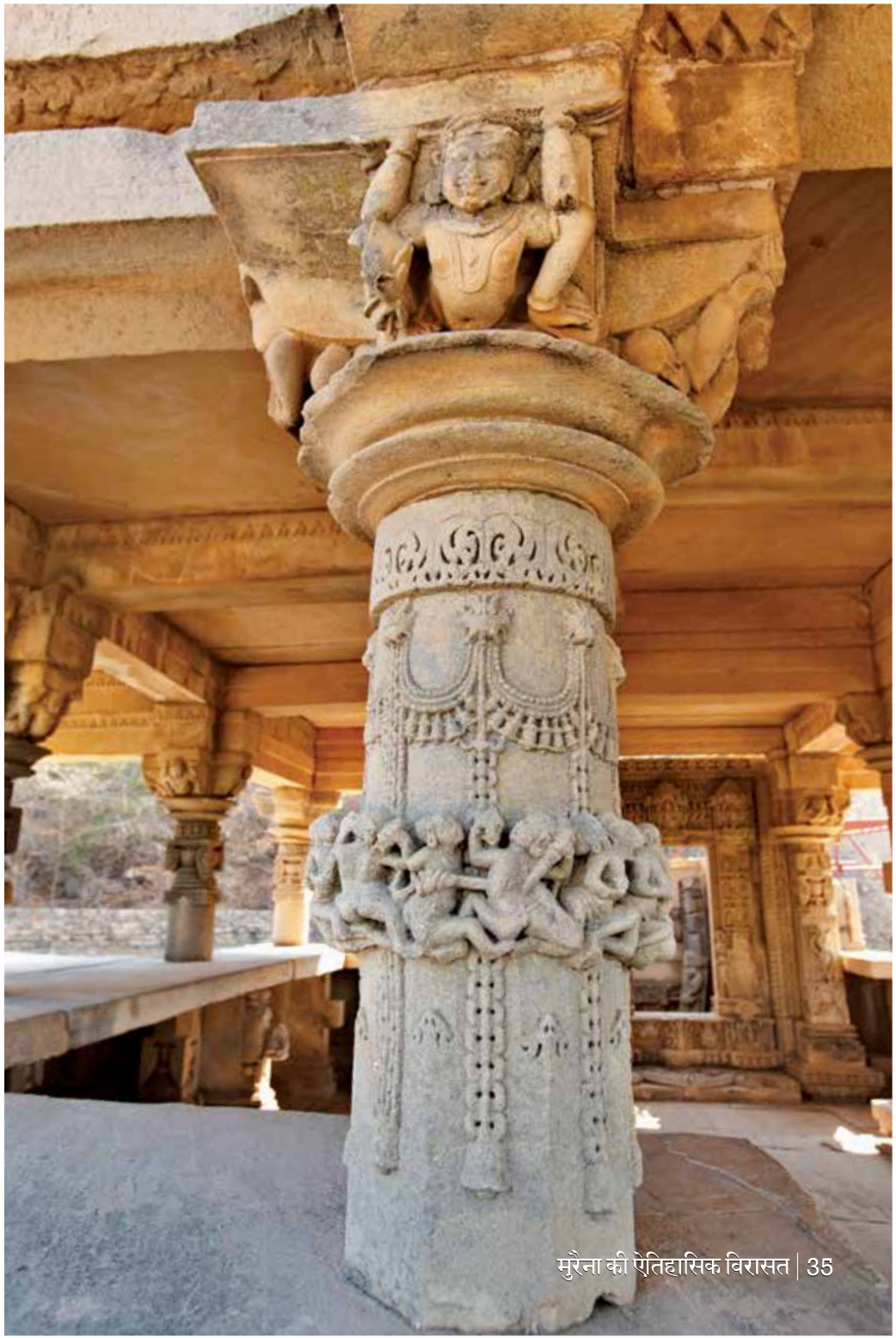

पर सभी मंदिर पूर्वोन्मुखी होते हैं ताकि सूर्य की पहली किरण देवता पर सीधी पड़े। गर्भगृह के चारों ओर परिक्रमा करने हेतु ऊपर से ढंका हुआ प्रदक्षिणा मार्ग बनाया जाता है।

जिस प्रकार राजप्रासाद में अलग-अलग महत्त्व के लोगों के लिए अतिथि कक्ष, विशिष्ट अतिथि कक्ष या अति विशिष्ट अतिथि कक्ष बनाए जाते हैं उसी क्रम में मंदिर संरचना में गर्भगृह के दायरे के बाहर महत्त्व के अनुसार प्रांगण बनाए गए। इस प्रकार मंदिर संरचना का विस्तृत क्षेत्र में फैलाव हुआ। ताकि वर्ष भर होने वाले सभी आयोजनों में भक्त बड़ी संख्या में भाग ले सकें।

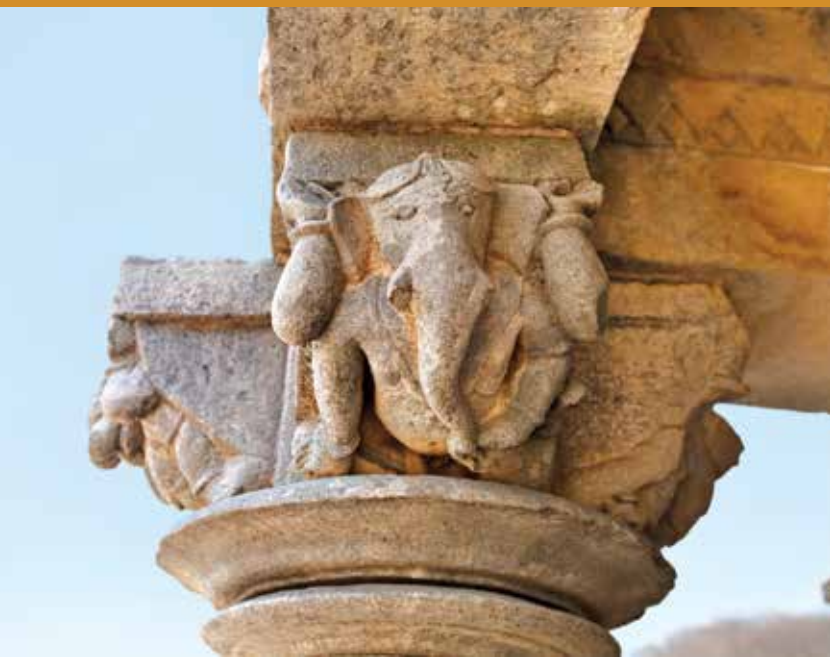

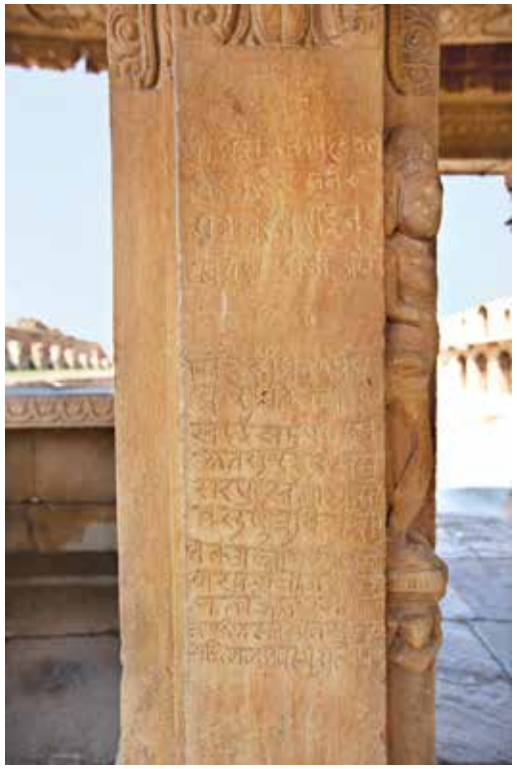

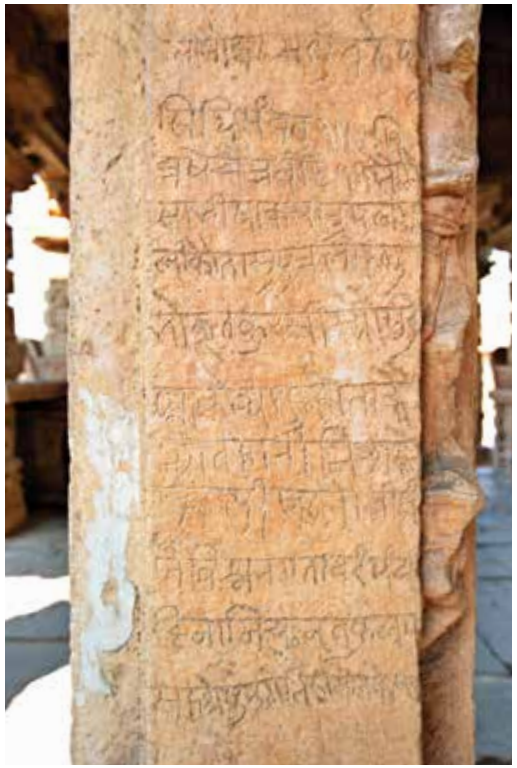

प्रवेश द्वार

इन मंदिरों के प्रवेश द्वार देखने लायक़ हैं। हालांकि ये विशाल नहीं हैं लेकिन इन पर किया गया अलंकरण बहुत बारीक़ है। इन्हें सराहने के लिए धैर्य के साथ थोड़ा समय गुज़ारें। इन्हें नज़दीक से निहारेंगे तो पाएंगे मंदिरों के प्रवेश द्वार पर द्वारपाल, मकरवाहिनी गंगा, यमुना, शंख और कमल की आकृतियाँ उकेरी गई हैं। उस काल के शिल्पी मूर्ति कला के नियमों में बंधे नहीं थे। वह उन्मुक्त थे। अपनी कल्पनाशीलता और कौशल को उन्होंने धार्मिक ग्रंथों से जोड़ दिया तो मानों मूर्ति गढ़ने के लिए नए गवाक्ष खुल गए। इन आकृतियों की विषय-वस्तु कृष्ण कथा, दशावतार, महिषासुर मर्दिनी, गणेश, गरुण, रामायण, महाभारत और पुराणों से ली गई है। जिसके अलंकरण के लिए मकरवाहिनी गंगा और कच्छपवाहिनी यमुना को उकेरा जाता है। प्रवेश द्वार पर नदियों को रखना नदी के पवित्र जल से शुद्ध होकर मंदिर में प्रवेश करने की भावना को प्रदर्शित करता है। इसमें शंख, पुष्प लताएँ एवं कमल मांगलिक चिन्हों का भी समावेश होता है।

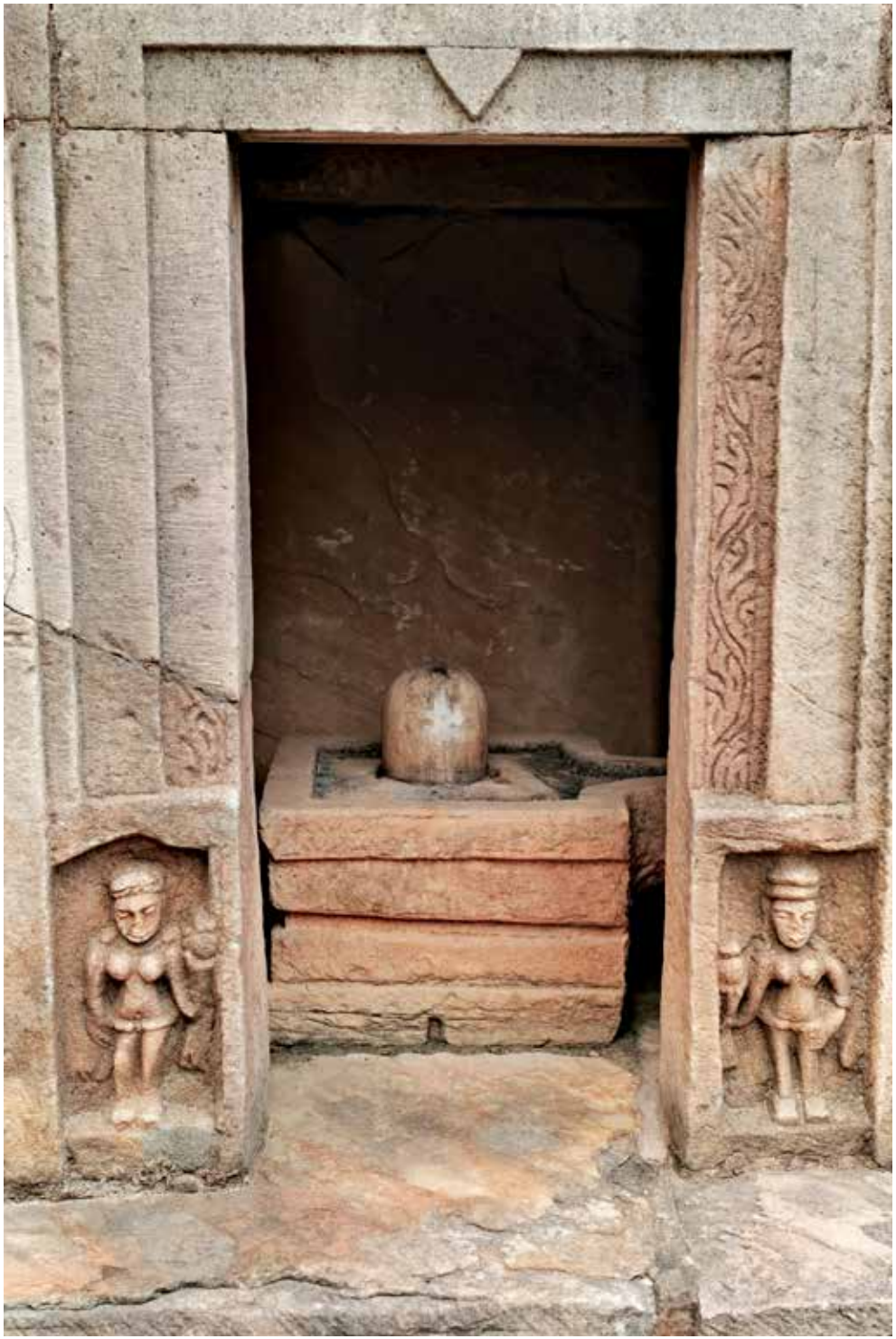

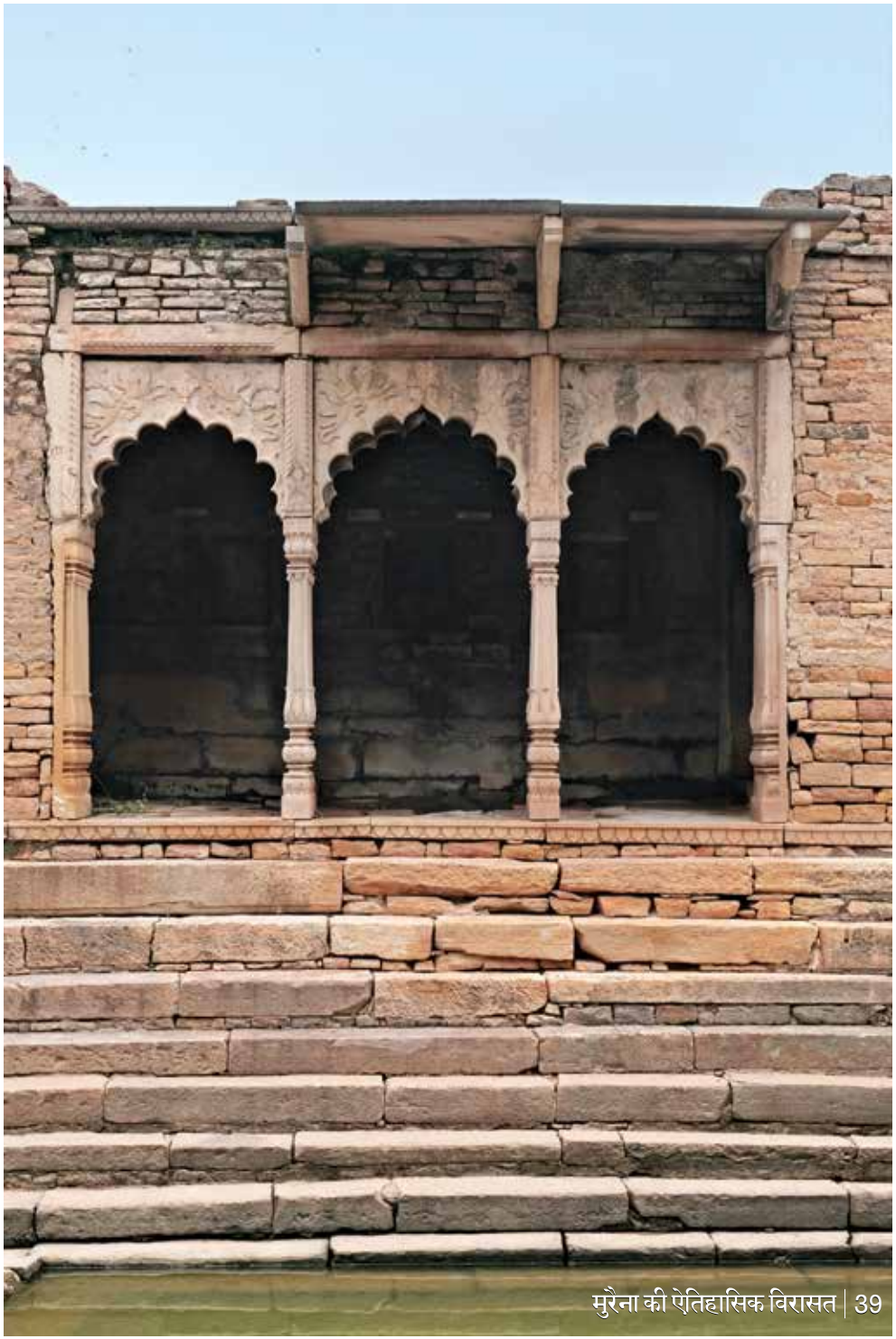

स्रोतः मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड

तोरण

बटेश्वर में जितने भी शिव मंदिर हैं उन्हें जब बारीकी से देखेंगे तो पाएंगे कि ये एक जैसे होते हुए भी थोड़ा-सा भिन्नता लिए हुए हैं। इनके द्वारों के ऊपर बना तोरण इन्हें एक दूसरे से भिन्न बनाता है। तोरण के बाद शिखर और शिखर के ऊपर आमलक इसे पूर्णता प्रदान करता है।

मंडप – इन मंदिर समूहों में मंडप को विशेष रूप से अलंकृत किया गया है। गर्भगृह के सामने खम्बों पर टिका एक खुला बरामदा या गर्भगृह की बाहरी दीवारों के चारों ओर बना प्रदक्षिणा पथ कहलाता है। मंडप खम्बों पर टिकी एक ऐसी संरचना है जिसकी छतों को भीतर से नक्काशी से सजाया गया है। गढ़ी पढ़ावली का मंदिर इसका सुन्दर उदाहरण प्रस्तुत करता है। ककनमठ में भी मंदिर के चारों ओर बने प्रदक्षिणा पथ को अलंकारपूर्ण स्तंभों से सजाया गया है।

शिखर या स्कन्ध – गर्भगृह की दीवारों का ऊपरी भाग स्कन्ध या शिखर होता है। यह अंदर से खाली और बाहर इसके शीर्ष पर कलश और पताकाएँ होती हैं। बटेश्वर के मंदिरों में शिखर बाहर से अलंकारपूर्ण हैं और भीतर से सादा लेकिन गढ़ी पढ़ावली के मंदिर के शिखर की भीतरी दीवारें अलंकारों से भरी हुई हैं।

अलंकरण

इन मंदिरों को देखकर लगता है कि शिल्पियों ने अलंकरण में मंदिर के किसी भाग को खाली नहीं छोड़ा है। मंदिर के दीवार के बाहरी भागों, स्तंभों, द्वार की चौखटों, तोरण, तालाबों, शिखर के अंदरूनी हिस्सों, गुम्बदों आदि को अपने कौशल से नक्काशीदार बनाया है। ऐसा प्रतीत होता है कि शिल्पी इन बेजान पत्थरों में जान फूंकने का प्रण किए साधना में दिन-रात लगे होंगे।

जगती या अधिष्ठान

गुर्जर-प्रतिहार राजाओं द्वारा बनाए गए इन मंदिरों की सबसे बड़ी विशेषता एक ऊँचा और विशाल चबूतरा है। इस काल में सभी मंदिर ऊँचे चबूतरों पर बनाए गए जिन पर चढ़ने के लिए सीढ़ियाँ बनाई गई। इसकी ऊंचाई दो-ढ़ाई फ़ीट से लेकर पच्चीस फ़ीट तक हो सकती है। बटेश्वर के मंदिर भी ऐसे ही ऊँचे चबूतरों पर बने हैं। ककनमठ मंदिर का अधिष्ठान लगभग 25 फ़ीट से भी ऊँचा प्रतीत होता है। वहीं गढ़ी पढ़ावली का मंदिर तो जैसे किसी ऊँचे टीले पर बना हो। यहाँ तक पहुँचने के लिए प्रांगण से आगे ऊँची सीढ़ियाँ पार करनी होती हैं।

मूर्तिकला

बटेश्वर मंदिर समूह में स्थित भूतेश्वर मंदिर यहाँ की सबसे बड़ी संरचना है। इस मंदिर से ही इस क्षेत्र का नाम बटेश्वर पड़ा। इसकी पहचान हुई मंदिर के शीर्ष पर स्थित गरूड़ स्तम्भ से। इससे पता चलता है कि यह मंदिर विष्णु को समर्पित है। इन मंदिर समूहों में विष्णु और शिव के मंदिर पाए जाते हैं, क्योंकि गुर्जर-प्रतिहार राजा स्वयं को सूर्य का वंशज मानते थे और अपने को लक्ष्मण का वंशज मानते थे। इसलिए विष्णु, शिव और सूर्य इनके आराध्य रहे होंगे। इन्हीं मन्दिरों में गंगा और यमुना भी देवी के रूप में उत्कीर्ण दिखती हैं। महाभारत से सम्बंधित कई मूर्तियों के होने के साथ ही यह मंदिर अजंता एलोरा से करीब 300 वर्ष पुराने हैं।

यहां एक हनुमान जी की मूर्ति है जिसमें रति और कामदेव को पैरों तले दबे हुए दिखाया गया है। ऐसा लगता है कि यह मूर्ति बाद में स्थापित हुई हो।

यहाँ शिल्पियों ने मंदिर के चबूतरे के बॉर्डर के अलंकरण में भी कलात्मक प्रयोग किए हैं। यहाँ पश्चिम

दिशा में स्थित एक बड़े मंदिर के चबूतरे के बॉर्डर पर कृष्ण के जीवन के उपाख्यानों और कथाओं को बड़ी सुंदरता से उकेरा गया है। इनमें मूर्तियों की एक पूरी की पूरी श्रृंखला में कृष्ण की बाल लीलाएं दर्शाती है। जिसमें दुग्ध पान कराती यशोदा माता, ओखल से बंधे कृष्ण, कुवल्यपीड हाथी पर मुग्दल उठाए बलराम-कृष्ण, कालिया नाग का वध, गोवर्धन पर्वत की कहानी, कंस का वध आदि चित्रित हैं।

मंदिर मूल रूप से बलुआ पत्थरों से तराश कर बने हैं, जिनका उपयोग उस काल में अधिक किया गया, क्योंकि यही उस क्षेत्र में सहजता से उपलब्ध थे, साथ ही तराशने के लिहाज से ज्यादा मुफीद रहे होंगे।

नागर शैली के पूर्ववर्ती इन मंदिरों में गांधार शैली की मूर्तिकला का प्रभाव भी देखने को मिलता है। लंबी नाक, सुडौल नारी शरीर, लंबे कान आदि भी देखे जा सकते हैं। कई मूर्तियों में घुटने तक घूम कर आती वैजयंती माला भी इस प्रभाव को दिखाती हैं। देवी-देवताओं, गंधर्वों के आकार, उनके वाद्य यंत्र-उपकरण आदि दर्शाते हैं कि मूर्तिकार अपनी कल्पना को स्वतंत्र रूप से उत्कीर्ण कर पाए।

मिथुन मूर्तरूप में यहां दिखाई नहीं देता। यह विशुद्ध शैव और वैष्णव शैली के मंदिर हैं, जहां तंत्र और शाक्त प्रभाव नहीं है। आम जीवन से जुड़ी घटनाओं और क्रियाकलाप को दिखाते दृश्य इसे मथुरा शैली के काफी करीब लाते हैं, जिसमें सौन्दर्य के साथ अध्यात्म भी जुड़ा है।

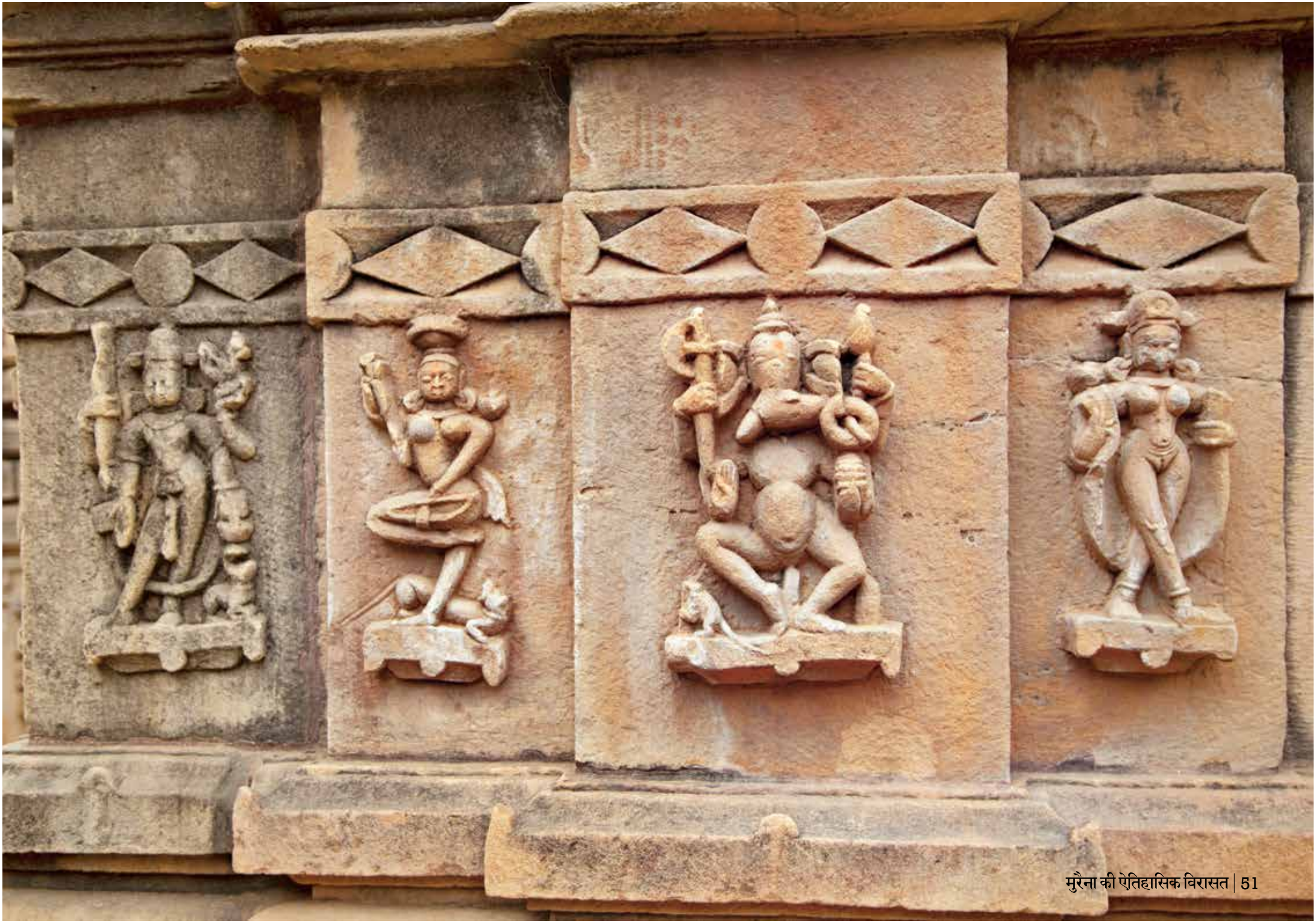

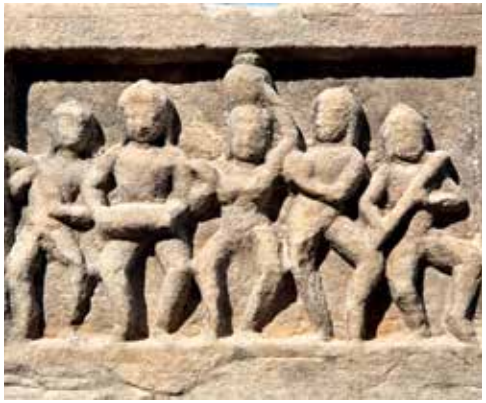

कृष्ण बाल लीलाएं

मितावली

चौंसठ योगिनी मंदिर

चौंसठ योगिनी मंदिर ग्वालियर से लगभग 40 किलोमीटर दूर मुरैना जिले में मितावली नामक एक छोटे से ग्राम में स्थित है। एक प्राचीन शिलालेख जिसकी तिथि विक्रम संवत् 1383 आंकी गई है, इसके अनुसार, मंदिर का निर्माण कच्छपघाट राजा देवपाल द्वारा वर्ष 1055–1075 के बीच करवाया गया था। कहा जाता है कि यह मंदिर सूर्य के गोचर के आधार पर ज्योतिष और गणित में शिक्षा प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण स्थान था। भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण ने वर्ष 1951 में इस अद्भुत मंदिर को एक प्राचीन और ऐतिहासिक स्मारक घोषित किया है।

चौंसठ योगिनी मंदिर, मुरैना, जिसे एकत्तरसो महादेव मंदिर के रूप में भी जाना जाता है लगभग सौ फीट ऊंची एक अलग पहाड़ी के ऊपर खड़ा है। इस गोलाकार मंदिर की छाया में स्थित है ग्राम मितावली।

इस मंदिर का यह नाम इसकी चौंसठ कोठरियों के कारण पड़ा है। यह गोलाकार मंदिर भारत के गिने-चुने मंदिरों में से एक है। यह एक योगिनी मंदिर है जो चौंसठ योगिनियों को समर्पित है। यह 170 फीट की त्रिज्या के साथ बाहरी रूप से गोलाकार है और इसके आंतरिक भाग में चौंसठ छोटे कक्ष हैं। मुख्य केंद्रीय मंदिर के भीतर स्लैब कवरिंग हैं जिनमें एक बड़े भूमिगत भंडारण के लिए वर्षा जल निकालने के लिए छिद्र हैं। छत से बारिश के पानी को भंडारण तक ले जाने वाली पाइप लाइनें भी दिखाई देती हैं। मंदिर के भीतर कोई मूर्ति नहीं है। ये कक्ष खाली हैं। यहाँ की मूर्तियाँ ग्वालियर के संग्रहालय में देखी जा सकती हैं। इस मंदिर को उस समय का तांत्रिक विश्वविद्यालय भी कहा जाता था। यह मंदिर तांत्रिक अनुष्ठान करके तांत्रिक सिद्धियाँ हासिल करने के केंद्र के रूप में विश्व प्रसिद्ध था। इस मंदिर की स्थापत्य कला अद्भुत है। यह एक विशाल संरचना है जिसने भूकंप के झटकों को भी बिना किसी क्षति के सामना किया है। यहाँ स्थानीय लोग मानते हैं कि ब्रिटिश हुकूमत के वास्तुकारों ने देश के संसद भवन के निर्माण की प्रेरणा इसी संरचना से ली थी, लेकिन इसका कोई ठोस साक्ष्य मौजूद नहीं है।

पूरे भारत में लगभग आठ या नौ प्रमुख चौंसठ-योगिनी मंदिर का उल्लेख मिलता है। इसमें केवल पांच के लिखित साक्ष्य उपलब्ध हैं, इनमें तीन मंदिर मध्य प्रदेश में और दो ओडिशा में स्थित हैं। मध्यप्रदेश

में यह मंदिर मुरैना, जबलपुर और खजुराहो में स्थित हैं वहीं ओडिशा में हीरापुर और रानीपुर में स्थित है।

योगिनी शब्द का अर्थ वह दिव्य शक्ति है जो नारी शरीर में परिलक्षित है। 64 योगिनियों का उल्लेख रुद्र यमला ग्रन्थ में उन शक्तियों के रूप में है, जो तंत्र साधक को माता, बहिन, रमणी या पुत्री के रूप में अवतरित होकर वर प्रदान करती है। पुराणों में इन्हें माता काली के अंश रूप में वर्णित किया गया है, जिसमें घोर दानव से युद्ध करते हुए पार्वती की इन सखियों ने अवतार लिया।

ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार योगेश्वर कृष्ण की नासिक रन्ध्र से इनका अवतार माना गया है। कृष्ण 64 कलाओ में निपुण हैं। 32 लक्षण जो व्यक्ति को पूर्ण पुरुष बनाते हैं। इस आधार पर 32 लक्षणों से युक्त युगल के मिलान से 64 योगिनियों का आविर्भाव हुआ। ये युगल शिव शक्ति माने गए। ये 64 कला सम्पूर्ण होने से पूर्णता को प्राप्त हुए।

इनमें तंत्र सिद्ध 10 महाविद्याओं का भी समावेश है जो श्री कुल और काली कुल की देवियां मानी गयी हैं। सभी आद्या शक्ति महाकाली की शक्तियों का प्रतिनिधि रूप हैं।

माना गया है कि हर दिशा में 8 योगिनी: सुर-सुंदरी योगिनी, मनोहरा योगिनी, कनकवती योगिनी, कामेश्वरी योगिनी, रति सुंदरी योगिनी, पद्मिनी योगिनी, नतिनी योगिनी और मधुमती योगिनी स्थापित हैं। जिनके साथ एक सहायक योगिनी भी हैं, तो इनका योग 16 हो गया।

4 दिशाओं के आधार पर इन्हें 64 योगिनियों के रूप में वर्गीकृत किया गया, जो 64 तंत्र की अधिष्ठात्री और सिद्धि देने वाली हैं।

चौंसठ योगिनियों के नाम

1. बहुरूप,
2. तारा,
3. नर्मदा,
4. यमुना,
5. शांति,
6. वारुणी,
7. क्षेमंकरी,
8. ऐन्द्री,
9. वाराही,
10. रणवीरा,
11. वानर-मुखी,
12. वैष्णवी,
13. कालरात्रि,
14. वैद्यरूपा,
15. चर्चिका,
16. बेतली,
17. छिन्नमस्तिका,
18. वृषवाहन,
19. ज्वालाकामिनी,
20. घटवार,
21. कराकाली,
22. सरस्वती,
23. बिरूपा,
24. कौवेरी,
25. भलुका,
26. नारसिंही,
27. बिरजा,
28. विकतांना,
29. महालक्ष्मी,
30. कौमारी,
31. महामाया,
32. रति,
33. करकरी,
34. सर्पश्या,
35. यक्षिणी,
36. विनायकी,
37. विंध्यवासिनी,
38. वीर कुमारी,
39. माहेश्वरी,
40. अम्बिका,
41. कामिनी,
42. घटाबरी,
43. स्तुती,
44. काली,
45. उमा,
46. नारायणी,
47. समुद्र,
48. ब्रह्मिनी,
49. ज्वाला मुखी,
50. आग्नेयी,
51. अदिति,
52. चन्द्रकान्ति,
53. वायुवेगा,
54. चामुण्डा,
55. मूरति,
56. गंगा,
57. धूमावती,
58. गांधार,
59. सर्व मंगला,
60. अजिता,
61. सूर्यपुत्री,
62. वायु वीणा,
63. अघोर,
64. भद्रकाली

इन शक्तियों के द्वारा इंद्रजाल मारण वशीकरण उच्चाटन स्तम्भन आदि क्रियाओ में साधक सफल हो पाते हैं। शाक्त मत के अघोर और नाथ शैव मत में इनका विशेष महत्व है।

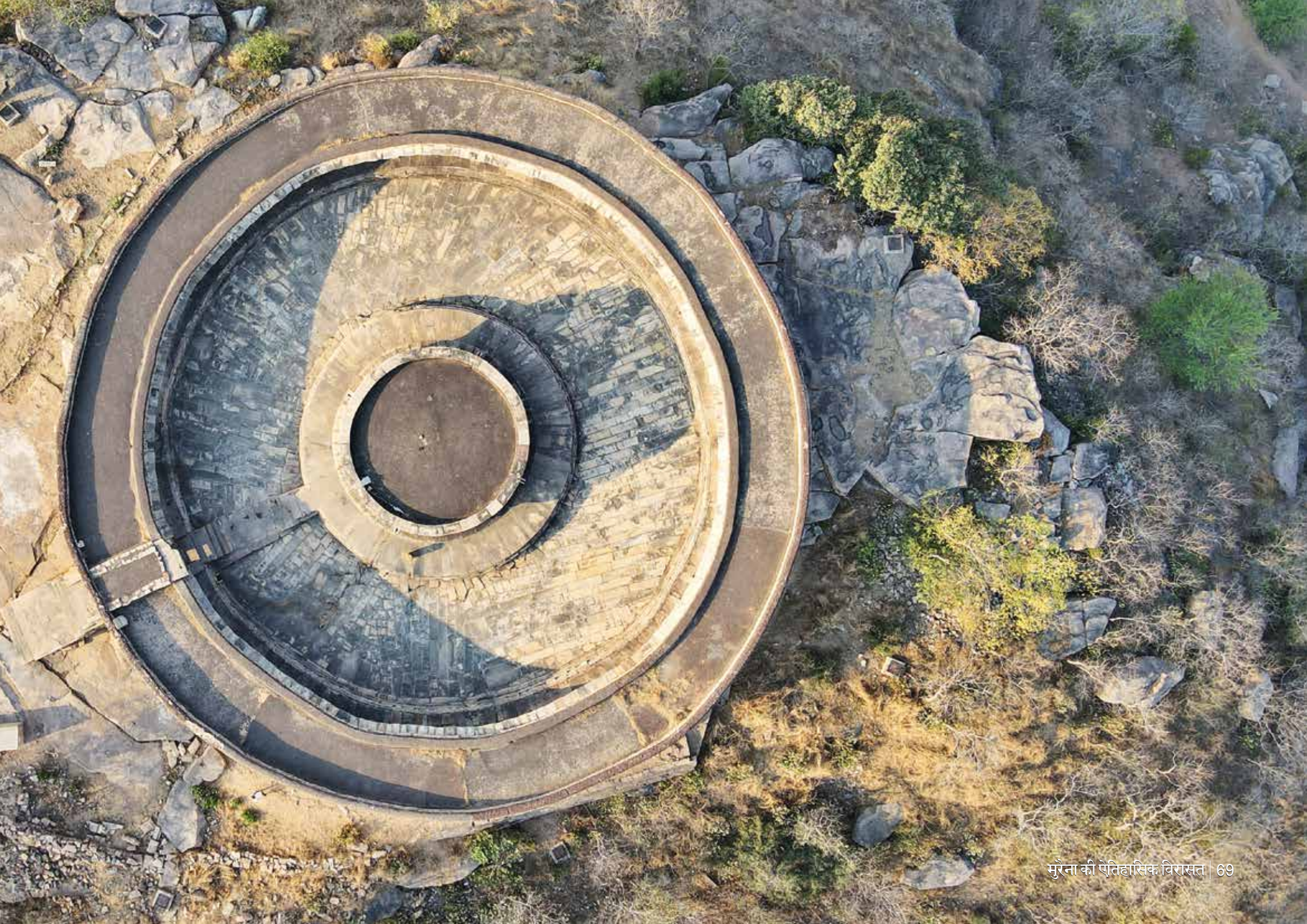

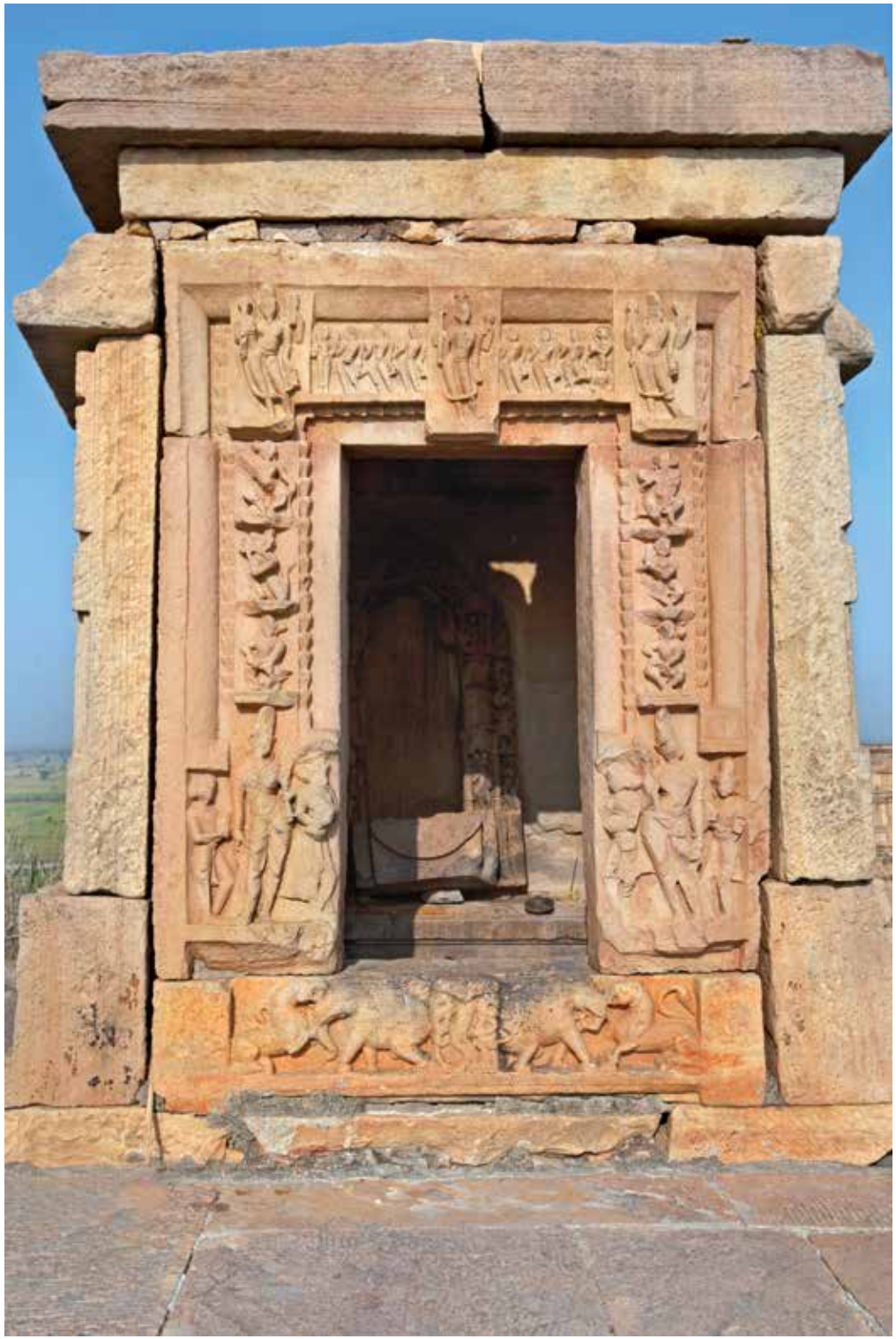

गढ़ी पढ़ावली

गुर्जर-प्रतिहार काल का स्थापत्य

गुर्जर-प्रतिहार काल में दो प्रकार के शिल्पी होते थे। पहला जिन्हें विश्वकर्मा या सूत्रधार कहा जाता था। यह एक सम्मानजनक पद हुआ करता था। यही लोग उस समय के इंजीनियर हुआ करते थे जो राजा की इच्छा को मूर्तरूप देने में अहम भूमिका निभाते थे। यह लोग राजा की इच्छा और अपने स्वतंत्र विचार से मंदिर का स्वरूप तय करते थे। मंदिर कितना भव्य होगा? कितने क्षेत्र में फैला होगा? उसके निर्माण का प्रयोजन क्या है? आदि महत्वपूर्ण बिंदु यही तय किया करते थे। उस समय के लोगों के पास मंदिर ही एकमात्र उत्तरकालीन एक ऐसी व्यवस्था थे जो कि वेदों के बाद मानव की मनोरथ की पूर्ति के लिए सामने आए।

मंदिरों के निर्माण के लिए समिति के गठन की शुरुआत भी गुर्जर-प्रतिहार काल में ही हुई। मंदिर का निर्माण जहाँ विश्वकर्मा या सूत्रधार के हाथ में होता था तो वहीं मंदिर के अलंकरण का भार शिल्पियों के कन्धों पर था। इस काल की मूर्तिकला बहुत मौलिक है। इस काल में मूर्तिकला के नियम तय नहीं हुए थे। अर्थात मूर्तिकार अपनी इच्छा से मूर्ति गढ़ने के लिए स्वतंत्र था। वह जैसा भी चाहता वैसी मूर्ति बना सकता था। उत्तर मध्य काल में मूर्तिकला के लक्षण निर्धारित हुए। इसीलिए गुर्जर-प्रतिहार काल की अनेक मूर्तियों को पहचानने में कठिनाई होती है। यही कारण है कि यह मूर्तियाँ अपने पूर्ववर्ती काल की मूर्तियों से प्रभावित नहीं हैं। गुर्जर-प्रतिहार काल इन्हीं विशेषताओं के लिए जाना जाता है।

देवालयों में दिव्य प्राणी

भारत विद्याविद श्रीकृष्ण "जुगनू" के अनुसार देवालयों में पशुओं की नाना प्रकार की मूर्तियां देखने को मिलती हैं, इनको एकाधिक पशुओं की काया के रूप में संयुक्त करके भी दिखाया जाता है। इनको व्याल मूर्तियां कहा जाता है, कहीं वराल भी कहा जाता है। विरालिका मूर्तियों के रूप में शिल्पियों में इनका व्यवहार रहा है। मंदिरों की द्वार शाखाओं की आखिरी सिंह शाखाओं में इनका स्वरूप देखने को मिलता है। दक्षिण भारत के ग्रंथों, यथा विश्वकर्म वास्तुशास्त्र में इनको याली के रूप में स्वीकारा गया है।

दसवीं सदी के वास्तुविद्या नामक ग्रंथ में द्वार की आखिरी शाखा का नाम ही व्याल शाखा कहा गया है। इनमें वराह, अश्व, अज, मृग, महिष, बंदर, सियार आदि को सिंह, हाथी, मानव, ग्रास आदि के साथ दिखाया जाता है। इनके कई प्रयोग हुए हैं। इन पर स्वतंत्र शास्त्र रचा जा सकता है। इनमें मिस्त्र, ग्रीक की कला का प्रभाव देखा जा सकता है। मूल रूप से यह शिल्पियों का अपना सृजन है।

समरांगण सूत्रधार और अपराजितपृच्छा जैसे ग्रंथों ही नहीं, अन्य प्रतिमा शास्त्रों में भी व्याल मूर्तियों का ज़िक्र आता है। समरांगण में इनके 16 रूप आए हैं। अपराजित और समरांगण सूत्रधार में सिंह, हाथी, अश्व, नर, नंदी, मेंढा, तोता, सूअर, भैंसा, चूहा, श्वान, गर्दभ, हरिण, शार्दूल, सियार आदि को व्याल रूप में दिखाए जाने का वर्णन है। इसका आशय है कि यह सृजन 9वीं सदी पूर्व से ही कला संसार में लोकप्रिय रहा है।

चराचर की जीव योनियों को नाना रूपों में दिखाए जाने के मूल में जैविक वैविध्य और उन पर मानवीय प्रयोगों को भी परिभाषित किया जा सकता है। सिंह इनमें लोकप्रिय जीव है। उसे अतुलित बली भी माना जाता है। वह गज को भी पछाड़ देता है। कोणार्क के मंदिर में दोनों ओर गज पछाड़ शेर बने हैं। संस्कृत में इनको गजाक्रांत शार्दूल कहा गया है। ये मन्दिर की जगती के प्रमाण में ताल मान से बनते हैं, लेकिन भित्तिगत होने पर खड़े भी दिखाए जाते हैं।

सच में यह कला अद् भुत है, बस इनको देखते ही याली, वराली कला की याद आ जाती है जो पिरामिड की कला के साथ अपना तालमेल दिखाती है। हालांकि उनका रूप विन्यास भारतीय मूल का मुहावरा लिए होता है, लेकिन मान्यता में समूचे जम्बूद्वीप के प्रतिनिधि होता है।

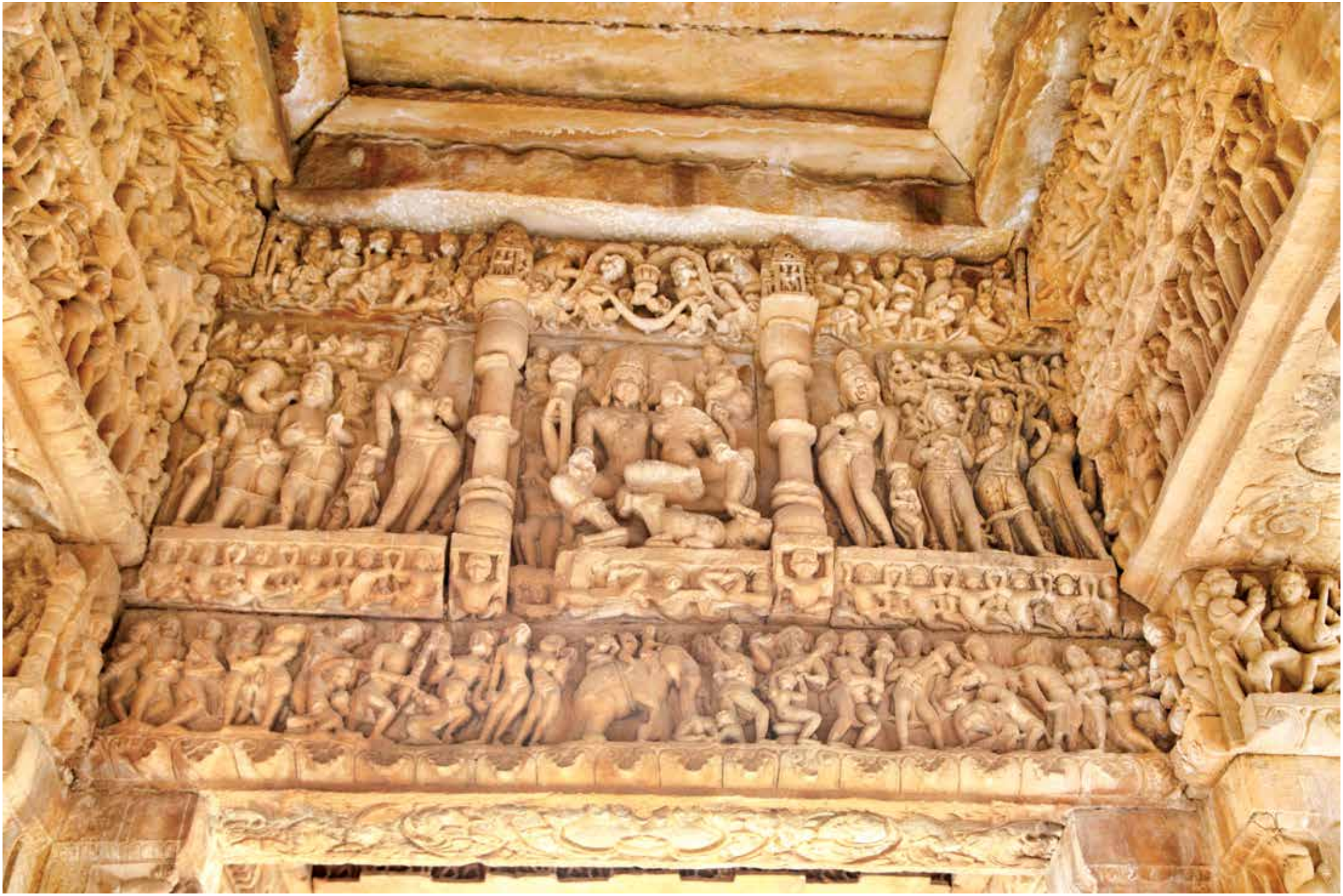

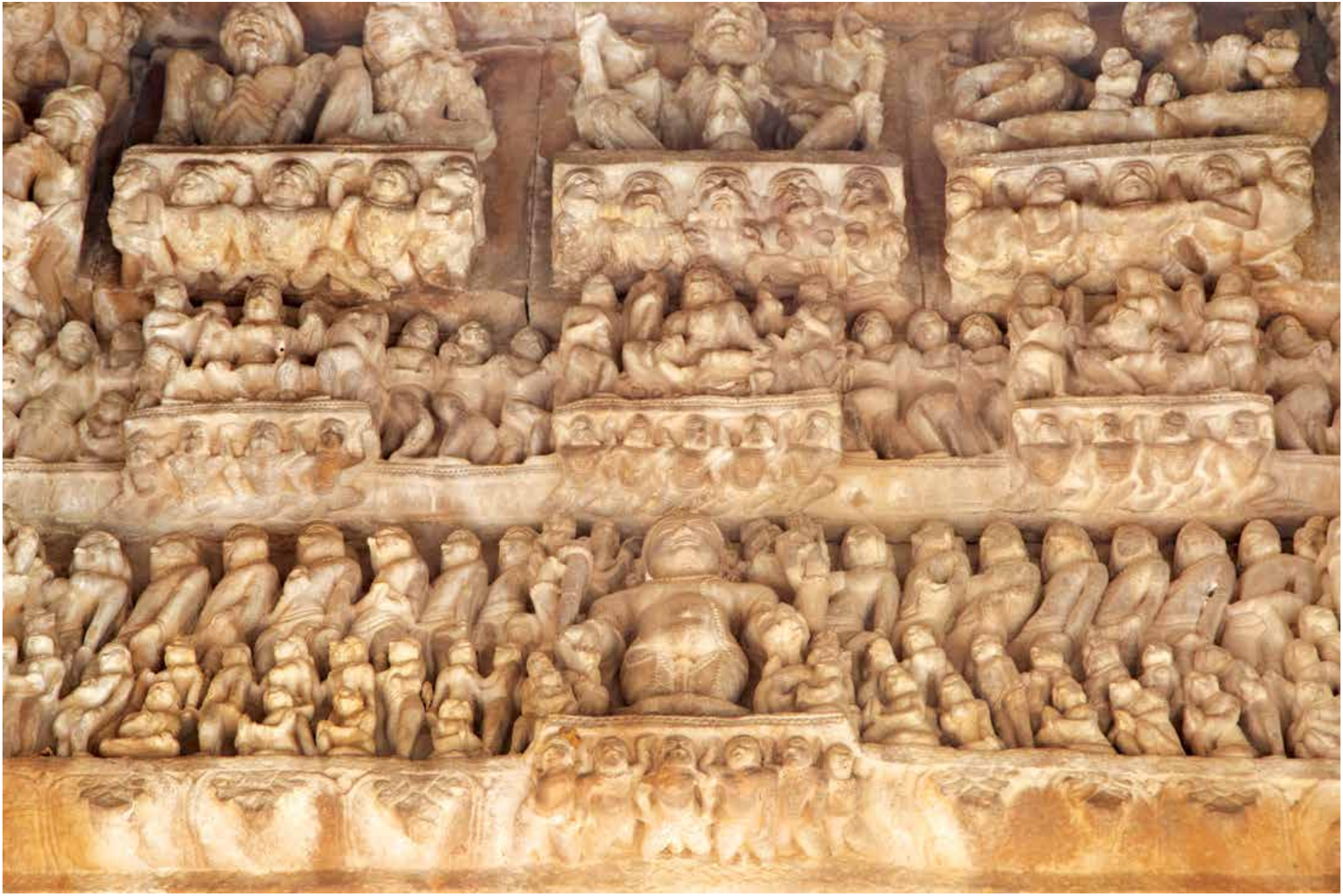

No 15

ककनमठ

शिव मंदिर

ककनमठ मंदिर के नाम से विख्यात यह अद्भुत मंदिर भग्नावस्था में भी अपने मूर्ति शिल्प को संजोये हुए है। एक बड़े चबूतरे पर निर्मित इस मंदिर की वास्तु योजना में गर्भगृह, स्तंभयुक्त मण्डप एवं आकर्षक मुखमण्डप है, जिसमें प्रवेश हेतु सामने की ओर सीढ़ियों का प्रावधान है। गर्भगृह में स्थापित शिवलिंग इस मंदिर के मुख्य देवता हैं। मंदिर के गर्भगृह के ऊपर विशाल शिखर (लगभग 100 फीट ऊँचा) है, जो अब जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है एवं इसके आंतरिक पाषाण ही अब दृष्टिगोचर हैं। वास्तविक स्वरूप में इस मंदिर के चारों ओर अन्य लघु मंदिरों का भी निर्माण किया गया था जिनके कुछ अवशेष देखे जा सकते हैं। मंदिर रानी ककनवती के नाम पर जाना जाता है जो संभवतः कच्छपघात शासक कीर्तिराज की रानी थी, जिसके आदेश पर ही इस मंदिर का निर्माण 11वीं शताब्दी में किया गया था।

WL-7/17
WL-5/13
WL-4/14
WL-3/15
WL-3/16
WL-3/17

NL-7/4
NL-6/4
NL-5/3
NL-5/4
NL-4/3
NL-4/4

WL-7/1
WL-7/3
WL-6/1
WL-6/2
WL-6/3

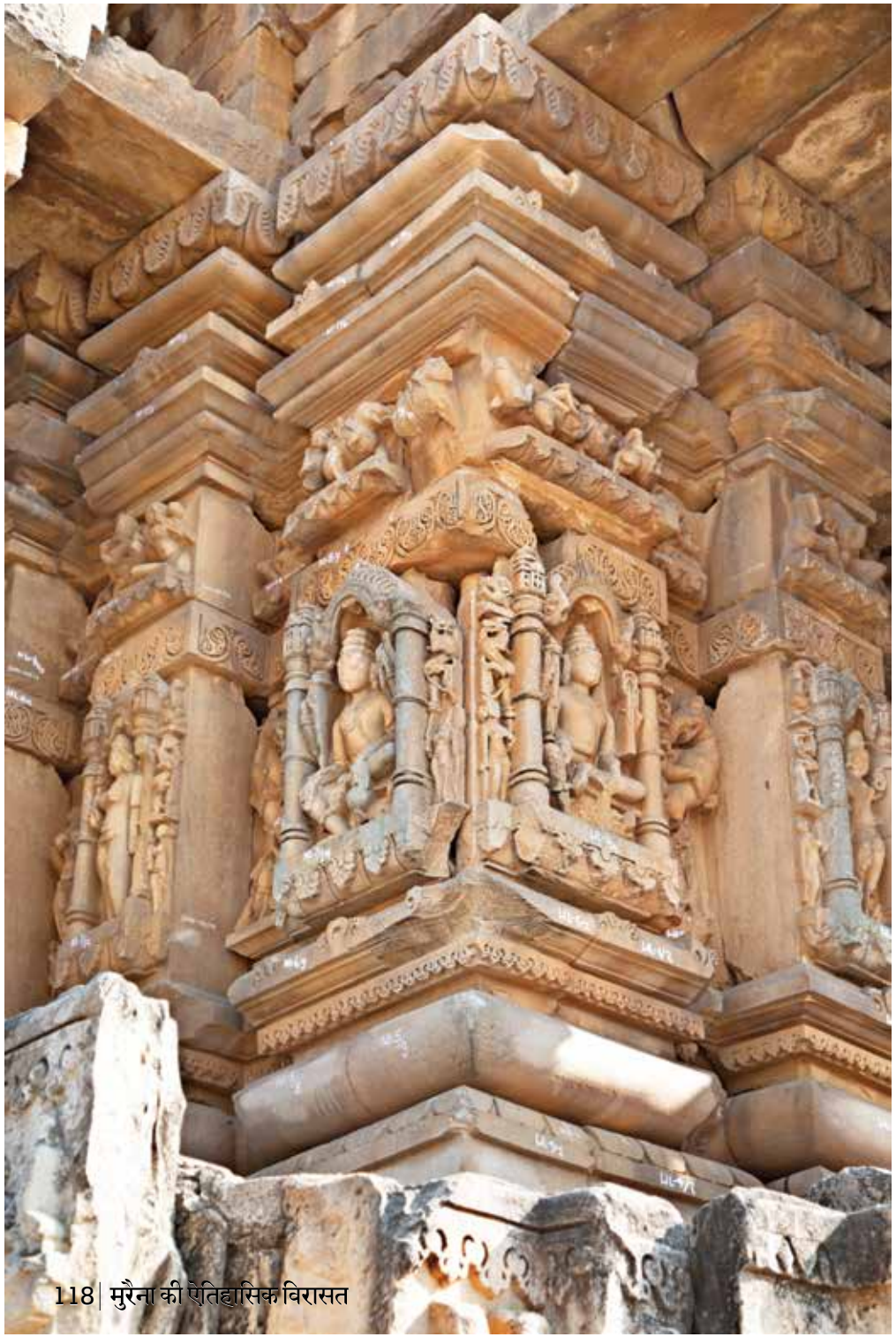

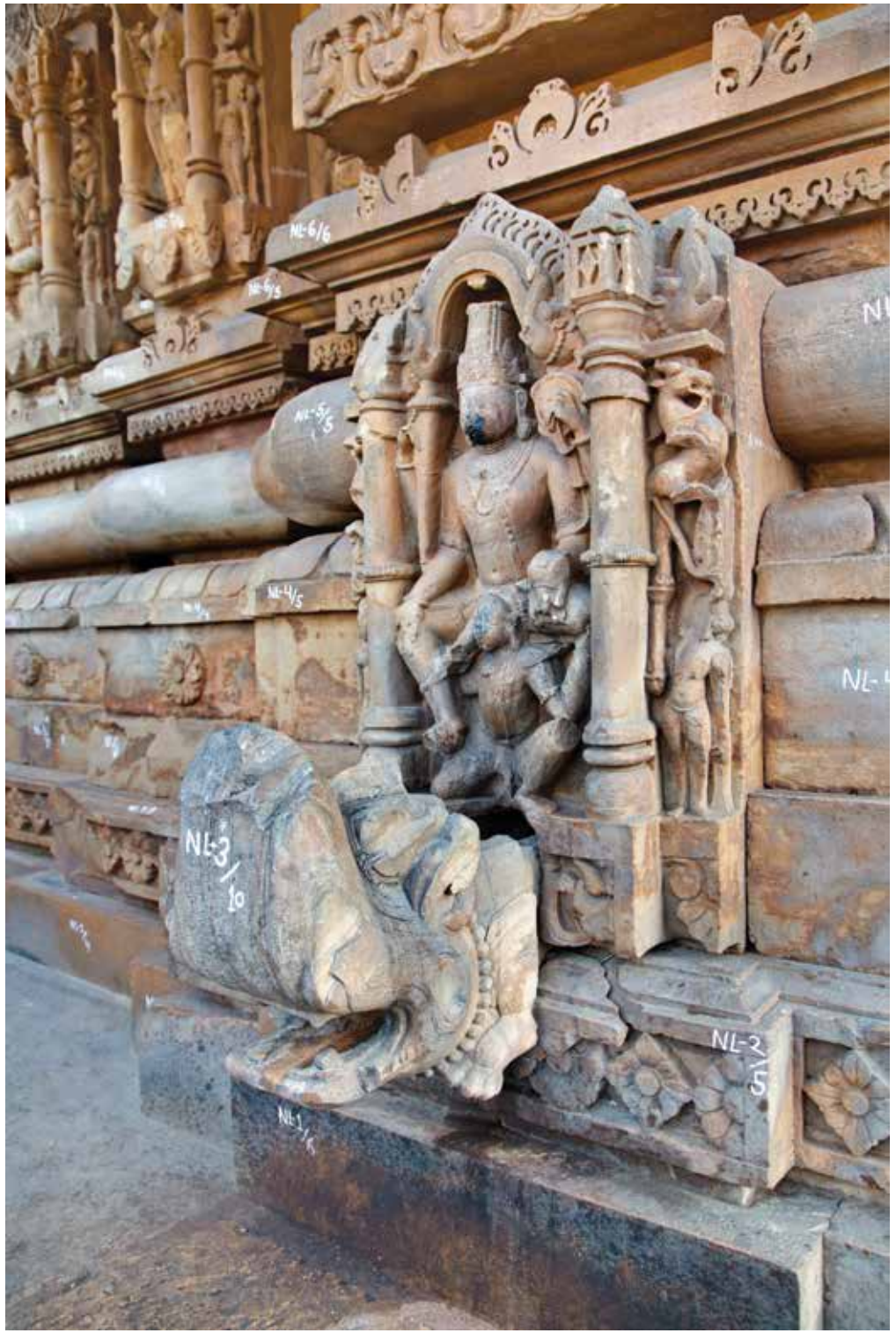
NL-6/6
NL-5/5
NL-4/5
NL-3/10
NL-2/5
NL-1/6

शिव ही आदि और शिव ही अंत है

मुरैना की धरती रहस्यों की धरती है। यह शिव की धरती है। शिव जो प्रतीक हैं जीवन और मृत्यु के, जो शाश्वत हैं, जो देवता हैं मसान के। वह सृष्टि के सृजनकर्ता, पालनकर्ता और संहारकर्ता हैं। शिव की शक्ति का जीता जागता उदहारण है बटेश्वर के 200 मंदिरों का एक ऐसा समूह जिसकी रक्षा स्वयं शिव ने की है। मुरैना जिले में पढ़ावली ग्राम के दक्षिण-पश्चिम में स्थित बटेश्वर में मंदिरों के भग्नावशेष एक पहाड़ी के पश्चिमी तलहटी के एक विस्तृत भूभाग पर फैले हुए हैं। इन मंदिरों का निर्माण गुर्जर-प्रतिहार राजाओं ने छठवीं शताब्दी से नौवीं शताब्दी के बीच करवाया था। यह मंदिर परवर्ती गुप्तकाल से गुर्जर-प्रतिहार काल तक की स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना है। इन मंदिरों का निर्माण करवाने वाले गुर्जर-प्रतिहार राजाओं ने अपने बाहुबल से क्षेत्र को 300 वर्षों तक विदेशी आक्रमणकर्ताओं से मुक्त रखा। लेकिन 14वीं सदी में आए भूकंप से यह मंदिर टूट कर लाखों पत्थरों के ढेर में बदल गए।

कितनी ही सदियाँ गुज़र गई लेकिन ये बेजान पत्थर वहीं पड़े रहे। जितने भी प्रसिद्ध यात्री यहाँ से होकर गुज़रे, उन सबने इस अद्भुत स्थान के बारे में लिखा। एक अंग्रेज़ यात्री और फोटोग्राफर केविन स्ट्रेंज तो इस स्थान की भव्यता से मंत्रमुग्ध हो गया था। भारतीय पुरातत्व,

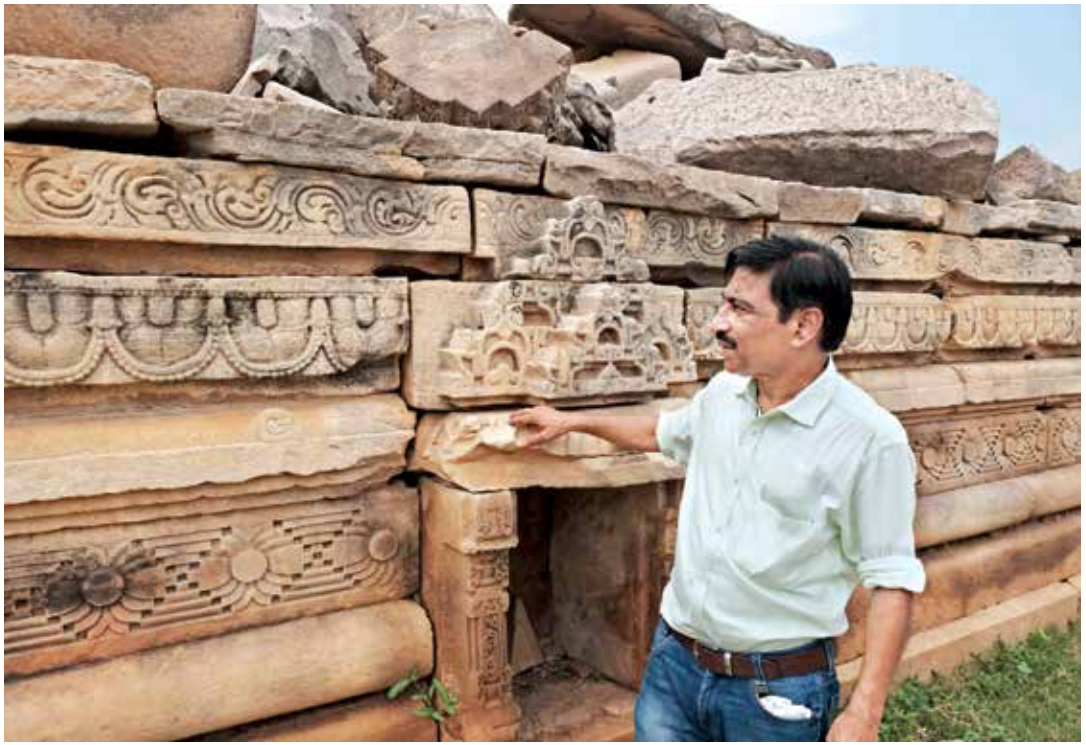

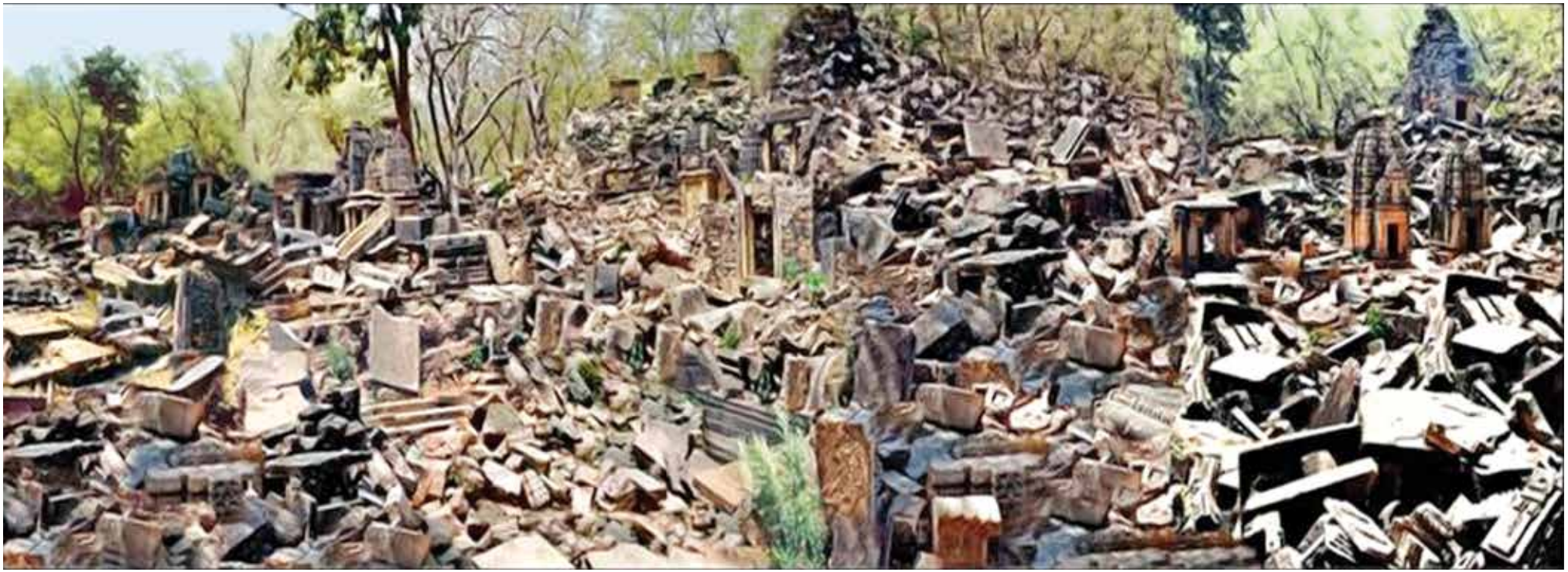

स्रोतः के.के. मुहम्मद

स्रोतः के.के. मुहम्मद

ऐतिहासिक भूगोल तथा इतिहास के प्रसिद्ध विद्वान् सर एलेक्ज़ेंडर कनिंघम ने भी इस जगह का दौरा किया था और उन्होंने अपनी रिपोर्ट में 100 मंदिरों के होने की बात कही थी। लेकिन किसी ने भी इन मंदिरों के जीर्णोद्धार का भागीरथी प्रयास नहीं किया था।

लेकिन यह कितनी अनोखी बात थी कि इस स्थान की सुरक्षा स्वयं शिव ने की। इतनी सदियां बीत जाने के बाद भी यहां से मूर्तियों और पत्थरों की चोरी नहीं हुई। इसका श्रेय जाता है चम्बल की घाटी और उसमें रहने वाले डाकुओं को। लोग इन बीहड़ों और डाकुओं के भय से इस स्थान पर नहीं आते थे।

यहां कोई आया, सुदूर दक्षिण से। श्री के. के. मुहम्मद यानि करिंगमन्नू कुझियिल मुहम्मद, आदेशन पुरातत्विद मध्य प्रदेश। असंभव को संभव कर दिखाने के जुनून वाला एक पुरातत्ववेत्ता। यह बात है वर्ष 2004 की। इतने बड़े क्षेत्र में मंदिरों के जीर्णोद्धार का काम चुनौतियों से भरा हुआ था। यह मंदिर कुख्यात डाकू निर्भय सिंह गुर्जर के कुलदेवता के थे। उनकी अनुमति के बिना यहाँ एक पत्ता तक हिलाना मना था। डाकुओं से सहयोग लेने में आईपीएस अधिकारी विजय रामन ने के. के. मुहम्मद की सहायता की। के. के. मुहम्मद किसी तरह से इन डाकुओं को समझाने में सफल हो गए कि यह मंदिर उनके पुरखों ने ही बनवाए थे। उन्होंने बड़ी कुशलता से डाकुओं का भरोसा जीता और सबसे पहले तीन मंदिर खड़े किए गए। उन मंदिरों को देख डाकू भावुक हो गए और फिर आगे के कार्य में पूरा सहयोग किया। इस तरह बटेश्वर में मंदिरों के जीर्णोद्धार का कार्य आरम्भ हुआ और मात्र डेढ़ साल में 29 मंदिरों को दोबारा खड़ा कर दिया गया।

लाखों पत्थरों के ढेरों के बीच से एक-एक पत्थर की पहचान करना और उन्हें फिर से खड़ा करना किसी चमत्कार से कम नहीं है। भारत में मंदिर समूहों के जीर्णोद्धार का यह सबसे बड़ा कार्य है। इस बीच बड़ी बाधाएं आई, लेकिन शिव की कृपा से इस कार्य की निरंतरता बनी रही। इस बीच चम्बल के बीहड़ डाकुओं के आतंक से मुक्त हुए, लेकिन खनन माफ़िया की गिरफ़्त में आ गए। एक ऐसा भी समय आया कि यहाँ का कार्य लगभग रुक-सा गया। लेकिन फिर कोई आया, उजाले की एक किरण साथ लिए। हाल ही में बटेश्वर मंदिर समूहों के जीर्णोद्धार कार्य को जारी रखने के लिए इंफोसिस फाउंडेशन की अध्यक्षा सुधा मूर्ति ने नेशनल कल्चर फण्ड में योगदान देते हुए सहयोग के लिए हाथ आगे बढ़ाया।

यह शिव की धरती है। यहां वही आएगा जिन्हें चुना जाएगा। वह आएंगे और अपने-अपने हिस्से का योगदान करते जाएंगे।

आहुति बाकी यज्ञ अधूरा
अपनों के विघ्नों ने घेरा
अंतिम जय का वज्र बनाने-
नव दधीचि हड्डियाँ गलाएँ।
आओ फिर से दिया जलाएँ

– अटल बिहारी वाजपेयी

स्रोतः मध्य प्रदेश पर्यटन बोर्ड

मुरैना
की ऐतिहासिक विरासत

डॉ.कायनात क़ाज़ी

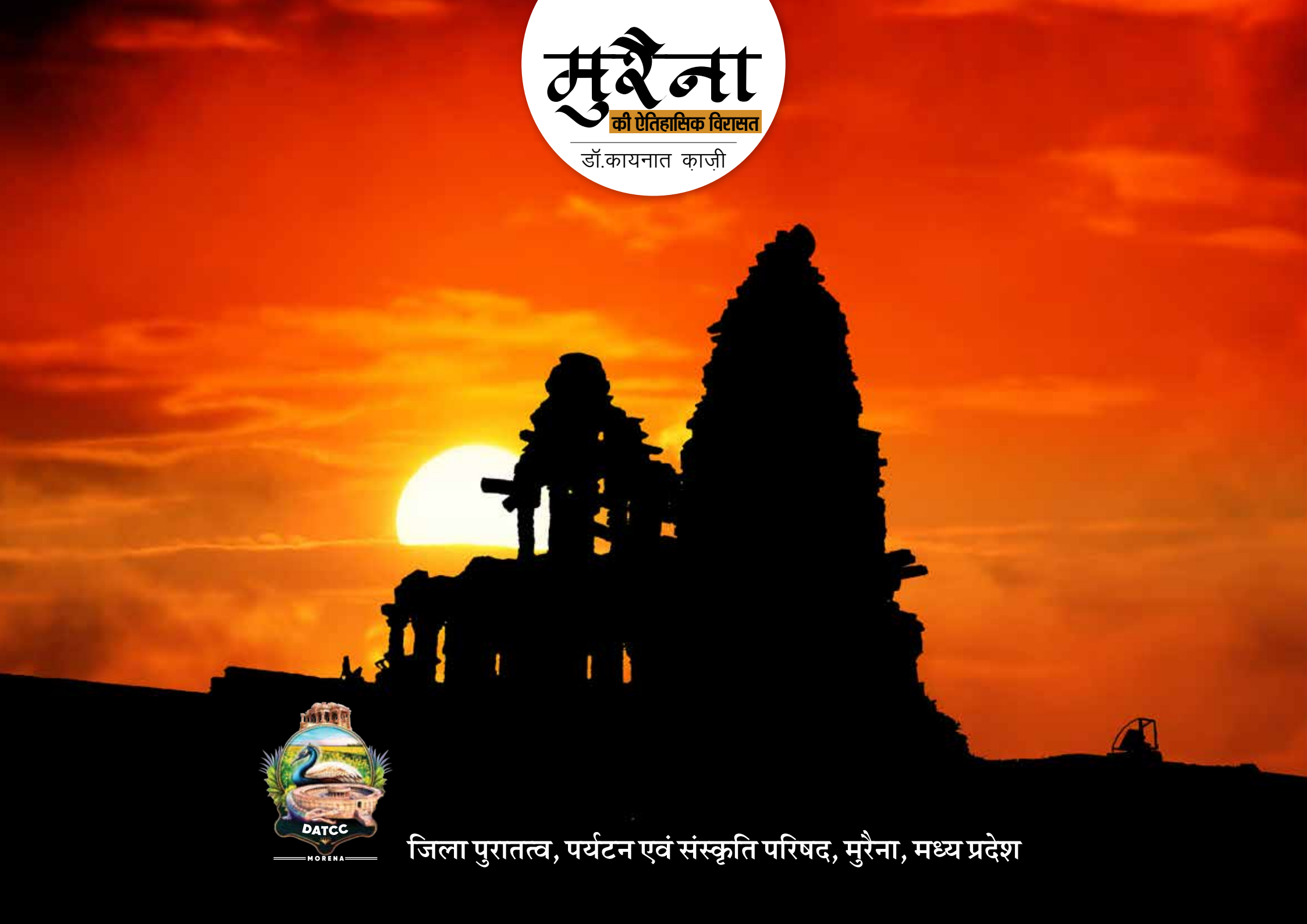

जिला पुरातत्व, पर्यटन एवं संस्कृति परिषद, मुरैना, मध्य प्रदेश

डॉ.कायनात क़ाज़ी

मुरैना
की ऐतिहासिक विरासत

डॉ. कायनात क़ाज़ी का परिचय

डॉ. कायनात क़ाज़ी फोटोग्राफर, ट्रैवल राइटर, डॉक्यूमेंट्री मेकर, सोलो फीमेल ट्रैवलर, शोधकर्ता और लेखिका हैं। लेकिन मूलतः वह एक जुनूनी यायावर हैं। इसकी बानकी यह है कि वह देश की एकमात्र सोलो फीमेल ट्रैवलर हैं, जिन्होंने महज चार साल में देश-विदेश में भ्रमण कर करीब दो लाख किलोमीटर की दूरी तय की है। फोटोग्राफर के रूप में उनके पास एक लाख से अधिक फोटो का कलेक्शन है। इनकी कई फोटो प्रदर्शनियां लग चुकी हैं।

डॉ. कायनात क़ाज़ी की कई पुस्तकें भी प्रकाशित हो चुकी हैं। जिनमें शोध कृति 'कृष्णा सोबती का साहित्य और समाज' कहानी संग्रह 'बोगनवेलिया' और यात्रा वृत्तांत राहगिरी शामिल हैं।

यायावरी और लेखन के लिए डॉ. कायनात क़ाज़ी को ढेरों पुरस्कार मिल चुके हैं। 'पर्यटन रत्न' जैसे सम्मान से उन्हें नवाजा जा चुका है। ब्लॉगिंग के लिए उन्हें प्रसिद्ध न्यूज चैनल 'एबीपी न्यूज' के 'बेस्ट हिंदी ब्लॉगर' का अवार्ड भी मिल चुका है। हिंदी साहित्य में पीएचडी कायनात, राहगिरी नाम से हिंदी का पहला ट्रैवल फोटोग्राफी ब्लॉग भी चलाती हैं। उन्हें विश्वविद्यालयों में अध्यापन और व्याख्यान के लिए भी आमंत्रित किया जाता है। डॉ. कायनात क़ाज़ी ने एमबीए के साथ-साथ पत्रकारिता और जनसंचार में स्नातकोत्तर की भी पढ़ाई की है।

डॉ. कायनात क़ाज़ी वर्तमान में देहरादून, उत्तराखंड स्थित यूनिवर्सिटी ऑफ पैट्रोलियम एनर्जी स्टडीज के सेंटर फॉर कल्चर एंड आर्ट्स में उत्तराखंड की लोक संस्कृति के संरक्षण के लिए कार्यरत हैं।